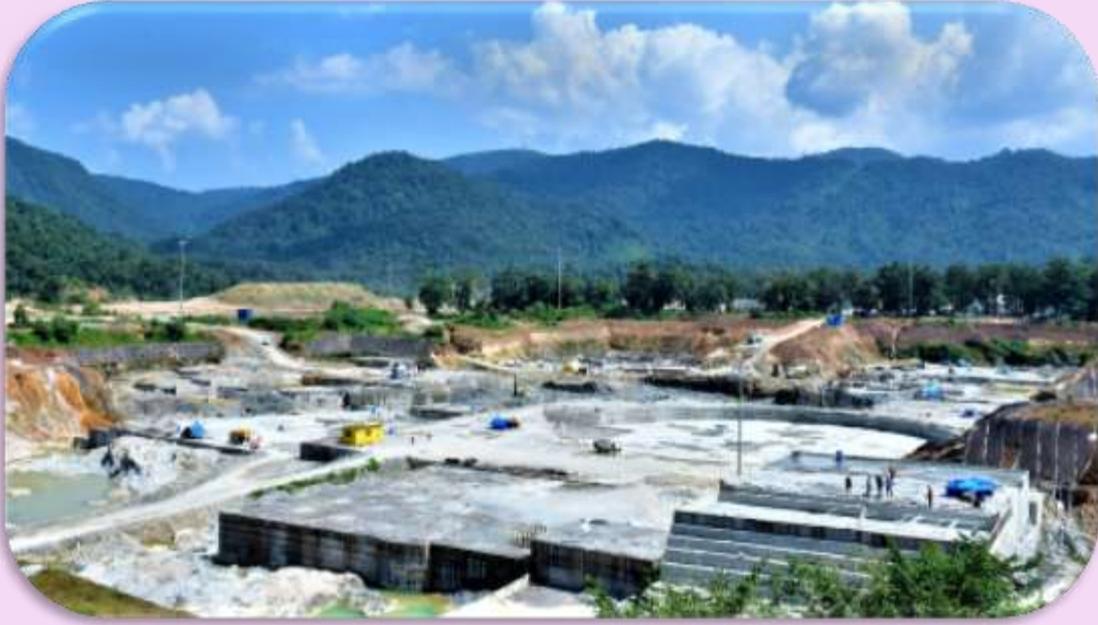




# अणुसंकेत

अंक:60 अप्रैल 2025 से सितंबर 2025



न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

## कैगा स्थल

## सीएसआर गतिविधियाँ

दिनांक 11.04.2025 को सिद्धर ग्राम, तहसील कारवार में कैगा सीएसआर समिति द्वारा बनाए गए "मल्लिकार्जुन प्रौढ़ शाला" का उद्घाटन



श्री बी विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल और श्री सतीश कृष्ण सैल, विधायक कारवार-अंकोला के करकमलों से "मल्लिकार्जुन प्रौढ़ शाला" का उद्घाटन



कैगा सीएसआर समिति द्वारा बनाए गए "मल्लिकार्जुन प्रौढ़ शाला" सिद्धर



श्री सतीश कृष्ण सैल, विधायक कारवार-अंकोला को कैगा सीएसआर समिति द्वारा स्कूल के कागजात का हस्तांतरण



कैगा सीएसआर समिति द्वारा बनाए गए "मल्लिकार्जुन प्रौढ़ शाला" सिद्धर के सामने कैगा प्रबंधन समिति के सदस्य एवं श्री सतीश कृष्ण सैल, विधायक कारवार-अंकोला



श्री जी के सुनिल, तकनीकी सेवाएं अधीक्षक, कैगा 3व4 द्वारा दिनांक 31.07.2025 को केरवडी ग्राम में सरकारी स्कूल भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजा



श्री अरुण कुमार माझी, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) कैगा स्थल द्वारा दिनांक 31.07.2025 को केरवडी ग्राम में सरकारी स्कूल भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजा

# अणुसंकेत

ई-गृहपत्रिका

अंक : 60 (अप्रैल, 2025-सितंबर, 2025)

मुख्य संरक्षक



बी. विनोद कुमार  
स्थल निदेशक, कैगा स्थल  
परामर्शदाता

संरक्षक



के. श्रीराम  
केंद्र निदेशक, कैगा 1 व 2  
सह परामर्शदाता

संरक्षक



जे एल सिंह  
परियोजना निदेशक, कैगा 5 व 6

संरक्षक



सुनील कुमार ओझा  
केंद्र निदेशक, कैगा 3 व 4  
संपादक



सुवर्णा एस. गांवकर  
प्रमुख (मानव संसाधन)



अजय थॉमस  
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)



बसंत कुमार सिंह  
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग



पी. राजेन्द्र  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



अफरोज़ा बेगम एम. के.  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



बबीता शर्मा  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



प्रशांत श्रीवास्तव  
असि ग्रेड -1

छायाचित्रण सहयोग



वेंकटरमण गौडा  
विभागीय फोटोग्राफर



महेश नाम्सेकर  
विभागीय फोटोग्राफर

गृहपत्रिका निःशुल्क निजी वितरण हेतु :

-:पाठक गण कृपया अपनी रचनाएं निम्न पते पर भेजें :-

: संपर्क सूत्र :

बसंत कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा)

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र, कैगा स्थल

डाक घर: कैगा, जिला: उत्तर कन्नड, कर्नाटक

पिन: 581 400, फोन : 9413346658

ई-मेल : [bksingh@npcil.co.in](mailto:bksingh@npcil.co.in)

आवरण पृष्ठ :

कैगा 5 व 6 का एक विहंगम दृश्य

नोट: प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

## अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय-वस्तु	विधा	पृष्ठ सं.
01	मुख्य संरक्षक की कलम से	स्थायी स्तंभ	05
02	परामर्शदाता की कलम से	स्थायी स्तंभ	06
03	संपादक की कलम से	स्थायी स्तंभ	07
04	राजभाषा कार्यान्वयन समिति	स्थायी स्तंभ	08
05	नेट जीरो	लेख	09-12
06	सीएसआर गतिविधियाँ	झलकियाँ	13
07	39वें एनपीआईएल स्थापना दिवस एवं 76वें हिंदी दिवस समारोह 2025 का संयुक्त आयोजन	लेख/ झलकियाँ	14-18
08	कैगा स्थल में हिंदी कार्यशाला का आयोजन	रिपोर्ट	19
09	माध्यम	यादों के झरोखे से	20
10	गोयार वॉटरफॉल की साइकिल यात्रा	यादों के झरोखे से	21
11	विदाई समारोह / श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पुरस्कार प्राप्त	झलकियाँ	22-25
12	घड़ी-घड़ी मेरा दिल धड़के	स्थायी स्तंभ	26
13	मेरा अनुभाग	लेख	27
14	मेरा अनुभाग	लेख	28
15	कैगा स्थल की छःमाही प्रगति रिपोर्ट	रिपोर्ट	29-31
16	मेथी	स्थायी स्तंभ	32-33
17	विश्व जननी/माँ और बेटी का प्यार	कविता	34
18	डॉ बी आर अंबेडकर जयंती	झलकियाँ	35
19	सह्याद्री संभ्रम समारोह	झलकियाँ	36
20	हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार	लेख	37
21	लोमड़ी-गधा-शेर और समाज	लघुकथा	38
22	बोधी वृक्ष : शांति/केपीईए कार्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस सतारोह	ज्ञान/झलकियाँ	39
23	स्मृतिपटल	स्थायी स्तंभ	40-42
24	कैगा संयंत्र स्थल में/कैगा टाउनशिप होमगार्ड कार्यालय में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2025	झलकियाँ	43
25	कैगा टाउनशिप में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2025	झलकियाँ	44



## मुख्य संरक्षक महोदय की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कैगा स्थल की गृहपत्रिका का 60वां अंक आपको समर्पित किया जा रहा है।

अनेकता में एकता हमारे देश की विशेषता रही है। सभी धर्म, संप्रदाय एवं भाषा-भाषी लोगों को एक जुट रखना हम सभी का दायित्व है। पूरे विश्व में ऐसा विविधता में एकता का उदाहरण और किसी देश में देखने को नहीं मिलता है। जब सभी लोग एक जुट होकर देश की प्रगति में सहभागिता करते हैं तब ही राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होता है और क्षेत्र विशेष के कौशल एवं विशिष्टता का लाभ देश को प्राप्त होता है।

हमारे न्यूक्लियर संयंत्र विविधता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हमारे कार्मिक विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामाजिक एवं भाषाई विविधता को एक साथ लेकर संरक्षा को प्राथमिकता देते हुए विद्युत उत्पादन कर राष्ट्र की ऊर्जा आवश्यकता में अपना योगदान दे रहे हैं।

हमारे दोनों बिजली उत्पादन केंद्रों -केजीएस-1 व 2 और केजीएस-3 व 4 को राष्ट्रीय संरक्षा परिषद, कर्नाटक चेष्टर के उन्नत सुरक्षा पुरस्कार-2025 से सम्मानित किया गया है। केजीएस-3व4 को AERB के फायर एवं सेफ्टी अवार्ड, 2024 के विजेता के रूप में सम्मानित किया गया है। साथ ही केजीएस-3व4 को एनपीसीआईएल संरक्षा पुरस्कार-2024 का उपविजेता घोषित किया गया है।

केजीएस-4 ने हाल ही में अपने निरंतर प्रचालन के एक वर्ष पूर्ण किए हैं।

निर्माणाधीन इकाई कैगा-5 एवं 6 में फर्स्ट पोर ऑफ़ कंक्रीट किए जाने संबंधी समस्त तैयारियां पूर्ण की जा चुकी हैं। बहुत शीघ्र ही हम कैगा-5 व 6 में फर्स्ट पोर ऑफ़ कंक्रीट करने जा रहे हैं।

केजीएस-1 रिएक्टर को दिनांक 01/04/2025 से प्रोजेक्ट मोड घोषित किया और रिएक्टर की आयु विस्तार के लिए ईएमसीसीआर एवं ईएमएफआर कार्य किए जा रहे हैं। यह इकाई अपने प्रोजेक्ट मोड से पूर्व 439 दिनों तक लगातार प्रचालनरत रही है।

इन सब उपलब्धियों को प्राप्त करने का श्रेय पूरे एनपीसीआईएल परिवार तथा अनुषंगी संस्थाओं के कार्मिकों के सतत परिश्रम और सहयोग को जाता है।

हमारे कार्मिक तकनीकी क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए अन्य संवैधानिक दायित्वों का भी सम्यक प्रकार से अनुपालन कर रहे हैं। हम राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों का भी पूर्ण रूप से पालन कर रहे हैं।

मैं अणुसंकेत के सम्पादक मंडल, लेखकों एवं सहयोगकर्ताओं को आभार प्रकट करता हूँ और वे आगे भी अपना सतत सहयोग प्रदान करते रहें ऐसी कामना करता हूँ।

अंत में, मैं अणुसंकेत पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग करने और कार्मिकों में साहित्य के प्रति रूचि जागृत करने के लक्ष्य में सफल हो, ऐसी कामना करता हूँ।

आपका

(बी विनोद कुमार)



## परामर्शदाता की कलम से

संवैधानिक मूल्यों का आदर एवं अनुपालन करना हम सभी का कर्तव्य है। मानव संसाधन किसी भी संस्था की बहुमूल्य निधि होता है। संस्था में कार्मिकों से परस्पर व्यवहार में सहज और सरल भाषा का विशेष महत्त्व है। हिंदी की सहजता और सरलता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।

कैगा स्थल में समस्त कार्मिक राजभाषा हिंदी में अपना अधिकतम कार्यालयीन कार्य कर राजभाषा के प्रति संवैधानिक दायित्व का पालन कर रहे हैं।

हम छोटे-छोटे कार्यों से भी अपना योगदान देकर राजभाषा में कार्य कर सकते हैं। अपने ई मेल के हस्ताक्षर, ई नोट में टिप्पणियां इत्यादि के साथ हिंदी में शुरुआत कर सकते हैं।

हिंदी में अनुवाद न आने पर हम हमारे मुख्यालय द्वारा जारी कंठस्थ सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल कर राजभाषा में योगदान दे सकते हैं।

यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि हमारे राजभाषा के योगदान के लिए हमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गृह मंत्रालय भारत सरकार, कारवार द्वारा वर्ष 2024-25 के श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आगे भी हम सभी को इसी उत्साह के साथ एक जुट होकर कार्य करना है और नित नए कीर्तिमान स्थापित करने हैं।

हम जन भाषा के प्रयोग एवं प्रौद्योगिकी नवाचार से नाभिकीय प्रचालन अनुभव को और परिष्कृत एवं संरक्षापूर्ण बना रहे हैं।

इस अंक को सफल बनाने के लिए समस्त सहयोगकर्ताओं जिन्होंने अपने आलेख, कविता, रिपोर्ट, कहानी, लघुकथा द्वारा अपना योगदान दिया है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

आपकी

(सुवर्णा एस गावंकर)



## संपादक की कलम से

प्रिय सुधी पाठकों,

भाषा और संस्कृति के मध्य गहरा संबंध है। ये साथ-साथ एक दूसरे को पोषित करती हैं। भाषा से विचारों की अभिव्यक्ति होती है। संस्कृति उन अभिव्यक्ति में भावनाएं समाहित करती हैं। इनके द्वारा ही जन मानस जड़ों से अपना जुड़ाव रखता है।

इन्हीं भावनाओं को केंद्र में रख कर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों एवं संविधान निर्माताओं भाषायी एकता को सांस्कृतिक चेतना का माध्यम बनाया। उत्सव और पर्वों द्वारा एक दूसरे से जुड़ने का मार्ग प्रशस्त किया। पुरातन काल से ही संतों ने हिंदी एवं संस्कृत के माध्यम से उत्तर से दक्षिण एवं विभिन्न क्षेत्रों में भाषा का प्रसार किया और स्वयं हिंदी में भी अन्य भाषा-भाषी शब्दों को समाहित कर हिंदी को समृद्ध किया। संविधान सभा द्वारा भी हिंदी के साथ अन्य भाषाओं के महत्व को स्वीकार करते हुए अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। अनुच्छेद 351 में हिंदी के विकास में संविधान की आठवी अनुसूची में वर्णित राज्यों की 22 राजभाषाओं के योगदान को स्वीकार किया। वर्तमान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारतीय भाषा विभाग की स्थापना इस दिशा में किया गया महत्वपूर्ण कदम है। यह दासता के प्रतीक से मुक्ति अर्थात अंग्रेजी से मुक्ति की ओर प्रयास है। भारतीयों का शासन भारतीय भाषा में हो यह उसकी पहल है। यह भी संभावना है कि निकट भविष्य में शासकीय दस्तावेज राज्य की राजभाषाओं में एवं संघ की राजभाषा हिंदी में जारी किए जाएंगे। राजभाषा विभाग द्वारा जारी भारती बहुभाषी अनुवाद सॉफ्टवेयर में 15 भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने की सुविधा है।

हमारे मुख्यालय एवं साइट द्वारा भी सूचना प्रौद्योगिकी एवं आईटी टूल्स की सहायता से राजभाषा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। कंठस्थ अनुवाद सारथी द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन अब और भी सहज और सरल हो गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि अणुसंकेत का 60वां अंक ज्ञानवर्धक, रोचक और सूचनाप्रद विषयवस्तु से आपमें उत्साह एवं ऊर्जा का निरंतर प्रसार करेगा।

आपके प्रतिक्रिया भरे पत्रों की प्रतीक्षा में ;

आपका

(बसंत कुमार सिंह)

# राजभाषा कार्यान्वयन समिति



बी विनोद कुमार  
स्थल निदेशक, कैगा स्थल



के श्रीराम  
केंद्र निदेशक  
केजीएस 1व2



जे एल सिंह  
परियोजना निदेशक  
कैगा 5व6



सुनील कुमार ओझा  
केंद्र निदेशक  
केजीएस 3व4



रामैय्या नाच्चम्मै  
तकनीकी सेवाएं अधीक्षक  
केजीएस 1व2



जी के सुनिल  
तकनीकी सेवाएं अधीक्षक  
केजीएस 3व4



एस जे तिप्पेस्वामी  
अपर मुख्य अभियंता  
(ई&यूएस)



सदानंद एन कामत  
प्रशिक्षण अधीक्षक



के आर मोहनराम,  
अपर मुख्य अभियंता (संरक्षा)



डॉ अजय दुबे  
चिकित्सा अधीक्षक



आर किरण  
गुणवत्ता अधीक्षक



वाई रविंद्र बाबु  
महाप्रबंधक (सीएमएम)



संदीप कुमार गुप्ता  
प्रमुख (वित्त एवं लेखा)



सुवर्णा सतीश गांवकर  
प्रमुख (मानव संसाधन)



अजय थॉमस  
उप महाप्रबंधक (मासं)



मयूर गुप्ता  
परियोजना अभियंता (योजना)  
कैगा 5व6



बसंत कुमार सिंह  
उप प्रबंधक (राजभाषा)

नेट जीरो क्या है ?

- नेट जीरो एक आदर्श स्थिति है, जहाँ पृथ्वी के वायुमंडल में छोड़ी गई ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा हटाई गई मात्रा के बराबर होती है। नेट जीरो तक पहुँचने के लिए डीकार्बोनाइज़ेशन प्रयासों के माध्यम से उत्सर्जन को हटाने और कम करने की आवश्यकता है।
- नेट जीरो शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि - यह वह स्थिति है जिस पर ग्लोबल वार्मिंग रुक जाती है। पेरिस समझौता नेट जीरो की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- नेट जीरो का अर्थ है ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना और/या यह सुनिश्चित करना कि किसी भी जारी उत्सर्जन को हटाकर संतुलित किया जाए।
- नेट जीरो से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें वायुमंडल में जाने वाली ग्रीनहाउस गैसों को वायुमंडल से बाहर निकालकर संतुलित किया जाता है।
- ग्रीनहाउस गैसों क्या हैं?
- ग्रीनहाउस गैसों (जिन्हें जीएचजी भी कहा जाता है) पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद गैसों हैं जो गर्मी को रोक कर रखती हैं।
- दिन के समय, सूर्य वायुमंडल में चमकता है, जिससे पृथ्वी की सतह गर्म होती है। रात में पृथ्वी की सतह ठंडी हो जाती है, जिससे गर्मी वापस हवा में चली जाती है। लेकिन कुछ गर्मी वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों द्वारा फँस जाती है। यही कारण है कि पृथ्वी का तापमान औसतन 14°C (57°F) पर रहता है।
- मुख्य ग्रीनहाउस गैसों क्या हैं?
- कार्बन डाइऑक्साइड  
CO<sub>2</sub> प्राकृतिक प्रक्रियाओं, जैसे ज्वालामुखी विस्फोट, पौधों की श्वसन क्रिया और जानवरों और मनुष्यों की सांसों के माध्यम से उत्सर्जित होती है। लेकिन 1800 के दशक में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के बाद से वायुमंडल में CO<sub>2</sub> की सांद्रता 50% तक बढ़ गई है, जो जीवाश्म ईंधन के जलने और बड़े पैमाने पर वनों की कटाई जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण है। अपनी प्रचुरता के कारण, CO<sub>2</sub> जलवायु परिवर्तन में मुख्य योगदानकर्ता है।
- मुख्य ग्रीनहाउस गैसों क्या हैं?
- मीथेन  
मीथेन का उत्पादन प्राकृतिक रूप से अपघटन के माध्यम से होता है। लेकिन फिर से, मानवीय गतिविधियों ने प्राकृतिक संतुलन को विस्थापित कर दिया है। मवेशी पालन, लैंडफिल अपशिष्ट डंप, चावल की खेती और तेल और गैस के पारंपरिक उत्पादन से बड़ी मात्रा में मीथेन निकलती है।
- मुख्य ग्रीनहाउस गैसों क्या हैं?
- नाइट्रस ऑक्साइड  
नाइट्रस ऑक्साइड का उत्पादन बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक एवं जैविक उर्वरकों के उपयोग, जीवाश्म ईंधन के दहन, नाइट्रिक एसिड के उत्पादन और बायोमास के जलने से होता है।
- जल वाष्प  
जल वाष्प सबसे प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली ग्रीनहाउस गैस है। पृथ्वी के वायुमंडल के गर्म होने पर इसकी मात्रा बढ़ जाती है, लेकिन CO<sub>2</sub> के विपरीत, जो पृथ्वी के वायुमंडल में सदियों तक रह सकती है, जल वाष्प केवल कुछ दिनों तक ही रहती है।
- मानव निर्मित ग्रीनहाउस गैसों
- तीन औद्योगिक फ्लोरोनेटेड गैसों - हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFC), परफ्लोरोकार्बन (PFC) और सल्फर हेक्साफ्लोराइड (SF<sub>6</sub>) - औद्योगिक प्रक्रियाओं के दौरान पूरी तरह से मानव निर्मित हैं और प्रकृति में नहीं पाई जाती हैं। हालाँकि वे वायुमंडल में बहुत कम सांद्रता में मौजूद हैं, लेकिन वे गर्मी को बहुत प्रभावी ढंग से फँसाते हैं।
- SF<sub>6</sub>, जिसका उपयोग उच्च वोल्टेज बिजली उपकरणों में किया जाता है, में CO<sub>2</sub> की तुलना में 23,000 गुना अधिक 'ग्लोबल वार्मिंग क्षमता' है। क्या है पेरिस समझौता?
- पेरिस समझौता एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समझौता है जिसे जलवायु परिवर्तन और उसके नकारात्मक प्रभावों से निपटने के लिये वर्ष 2015 में दुनिया के लगभग प्रत्येक देश द्वारा अपनाया गया था।

- इस समझौते का उद्देश्य वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को काफी हद तक कम करना है, ताकि इस सदी में वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर (Pre-Industrial level) से 2 डिग्री सेल्सियस तक रखा जा सके।
- इसके साथ ही आगे चलकर तापमान वृद्धि को और 1.5 डिग्री सेल्सियस रखने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पेरिस समझौते का इतिहास
- 30 नवंबर से लेकर 11 दिसंबर, 2015 तक 195 देशों की सरकारें पेरिस, फ्रांस में इकट्ठा हुईं और वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के उद्देश्य से जलवायु परिवर्तन पर एक नए वैश्विक समझौते को संपन्न किया।
- सीओपी 21 में भारत
- भारत ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि हमें 1.25 अरब आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए तेजी से विकास करने की जरूरत है, और इनमें से 300 मिलियन लोगों के पास ऊर्जा की पहुंच नहीं है।
- फिर भी, बढ़ती मांगों के बावजूद, भारत ने प्रति इकाई सकल घरेलू उत्पाद में उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तर से 33-35% तक कम करने का संकल्प लिया है।
- स्थापित क्षमता का 40% गैर-जीवाश्म ईंधन से प्राप्त करने का लक्ष्य।
- 2022 तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य।
- 2.5 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने के लिए वन क्षेत्र को बढ़ाने की योजना है।
- शुल्कों और सब्सिडी में कमी के माध्यम से जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना।
- भारत ने समानता और विभेदित जिम्मेदारियों के सिद्धांतों पर जोर दिया
- भारत के अनुसार, समानता का अर्थ राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं से है, जो राष्ट्रों द्वारा व्याप्त कार्बन क्षेत्र के अनुरूप होनी चाहिए।
- भारत की एनडीसी की मुख्य विशेषताएं
- 2005 के स्तर से 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 33 से 35 प्रतिशत तक कम करना।
- प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और हरित जलवायु कोष सहित कम लागत वाले अंतर्राष्ट्रीय वित्त की सहायता से 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता प्राप्त करना।
- 2030 तक अतिरिक्त वन एवं वृक्ष आवरण के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन CO2 समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक का निर्माण करना।

- भारत ने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान के दो लक्ष्य समय से पहले ही हासिल किए
- i. अपने सकल घरेलू उत्पाद-जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तर से 2030 तक 33 से 35 प्रतिशत तक कम करना; और
- ii. 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन पर आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी विद्युत स्थापित क्षमता प्राप्त करना।
- इन दोनों लक्ष्यों को समय से काफी पहले हासिल किया जा चुका है।

31 अक्टूबर, 2023 तक; गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा संसाधनों से संचयी विद्युत स्थापित क्षमता 186.46 मेगावाट है, जो कुल संचयी विद्युत स्थापित क्षमता का 43.81 प्रतिशत है। दिसंबर 2023 में भारत द्वारा यूएनएफसीसीसी को सौंपे गए तीसरे राष्ट्रीय वक्तव्य के अनुसार, 2005 और 2019 के बीच उसके जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता 33 प्रतिशत कम हो चुकी है।

सीओपी 26 में भारत

भारत की ओर से अपना राष्ट्रीय वक्तव्य देते हुए प्रधानमंत्री ने COP-26 में जलवायु कार्रवाई के लिये भारत की ओर से पाँच प्रतिबद्धताएँ प्रस्तुत की गईं।

1. वर्ष 2030 तक भारत की गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावाट (GW) तक ले जाना।
2. वर्ष 2030 तक भारत की 50% ऊर्जा आवश्यकताओं को अक्षय ऊर्जा के माध्यम से पूरा करना।
3. वर्ष 2030 तक भारत की अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता में 45% से अधिक की कमी करना।
4. अब से वर्ष 2030 तक इसके शुद्ध अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कटौती करना।
5. वर्ष 2070 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करना।





- सीमेंस, हीरो मोटो , एस.बि.आई : 2030
  - महिंद्रा & महिंद्रा, विप्रो : 2040
  - टाटा पावर : 2050
- आर.ई 100 , ईवी 100 , ईपी 100



कार्बन

फुटप्रिंट क्या है

- कार्बन फुटप्रिंट मानव गतिविधि द्वारा उत्पादित ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन की कुल मात्रा है।
- कार्बन फुटप्रिंट का अर्थ है किसी एक संस्था, व्यक्ति या उत्पाद द्वारा किया गया कुल कार्बन उत्सर्जन।
- संयुक्त राज्य अमेरिका में एक व्यक्ति का औसत कार्बन फुटप्रिंट 16 टन है।
- दुनिया भर में औसत कार्बन फुटप्रिंट 4 टन के करीब है।

कार्बन फुटप्रिंट के तीन तरह के स्कोप

- स्कोप 1 : डायरेक्ट एमिशन
- स्कोप 2: इन डायरेक्ट एमिशन- उप स्ट्रीम गतिविधि
- स्कोप 3: इन डायरेक्ट एमिशन- डाउन स्ट्रीम गतिविधि

Global warming potential of selected electricity sources

Life cycle CO<sub>2</sub> equivalent (including abatement effect) from selected electricity supply technologies according to IPCC 2014, arranged by decreasing (lowest to highest CO<sub>2</sub>e) values.

Technology	Min.	Median	Max.
<b>Currently commercially available technologies</b>			
Wind - P1	0.01	0.01	0.01
Wind - commercial range	0.01	0.01	0.01
Hydro - run-of-river	0.01	0.01	0.01
Solar PV - Utility scale	0.01	0.01	0.01
Solar PV - Rooftop	0.01	0.01	0.01
Geothermal	0.01	0.01	0.01
Concentrated solar power	0.01	0.01	0.01
Hydroelectric	0.01	0.01	0.01
Small hydro	0.01	0.01	0.01
Nuclear	0.01	0.01	0.01
West Coast	0.01	0.01	0.01
<b>Not commercially available technologies</b>			
Coal (Total and average)	0.01	0.01	0.01

- ग्रीन टेरिफ
  - आर.ई.सि
  - कार्बन वाच
  - कार्बन टैक्स
- जीरो एनर्जी बिल्डिंग / नेट जीरो बिल्डिंग



नेट जीरो हासिल करने के लिए सेक्टर बेस्ड लक्ष्य

कार्बन न्यूट्रल कंपनी

- बोश इंडिया , इनफोसिस : कार्बन न्यूट्रल घोषित
- कार्बन न्यूट्रल टारगेट वर्ष

## पावर सेक्टर

- कोल उर्जा: 2040 पीक, 2050-60: 80 % तक कमी
- सोलर उर्जा: 1689 GW : 2050, 5630 GW: 2070

## विंड उर्जा: 557 GW: 2050, 1792 GW 2070

- परमाणु उर्जा: 68 GW: 2050, 225 GW 2070

## ट्रांसपोर्ट सेक्टर

- इलेक्ट्रिक कारे: 2070 तक 84 % मार्किट शेयर
- इलेक्ट्रिक ट्रक : 2070 तक 79 % मार्किट शेयर

## इंडस्ट्रियल सेक्टर

- कोयला प्रयोग: 2040 पीक, 2065 तक 90% तक कमी

- हाइड्रोजन प्रयोग: 2050 तक 15 %, 19 % 2070 तक

## रिफाइनरी सेक्टर

- क्रूड आयल: 2050 पीक, 2070 तक 90% तक कमी

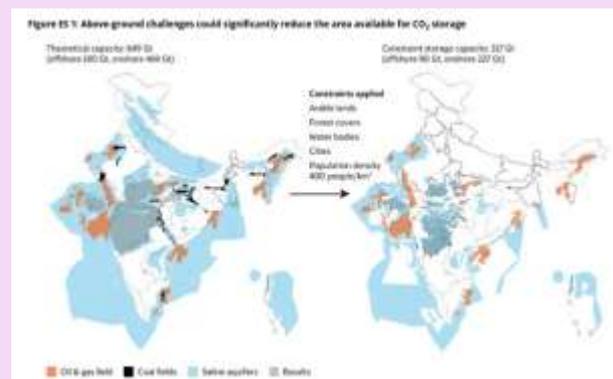
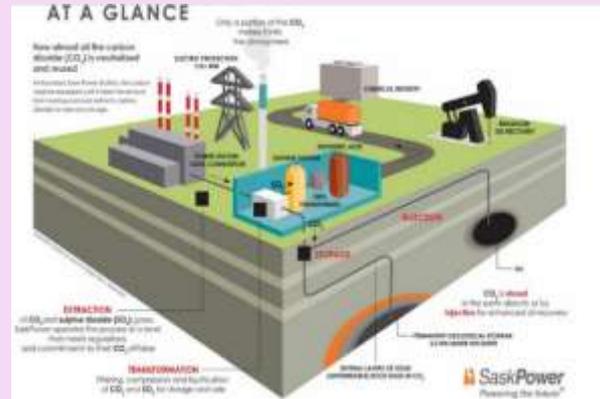
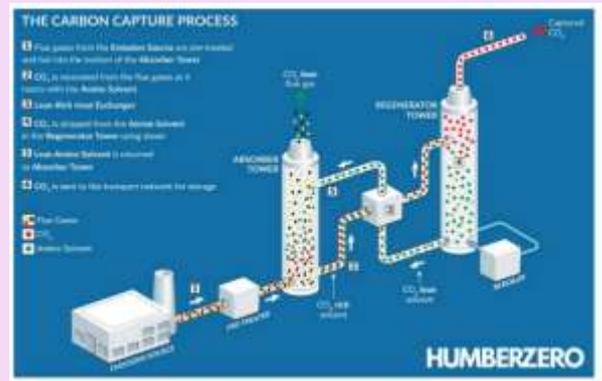
## कार्बन कैप्चर और स्टोरेज क्या है?

- कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS) कार्बन डाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>) उत्सर्जन को कम करने का एक तरीका है।
- यह एक तीन-चरणीय प्रक्रिया है।
- 1) बिजली उत्पादन या औद्योगिक गतिविधि, जैसे हाइड्रोजन उत्पादन, स्टील या सीमेंट बनाने से उत्पन्न CO<sub>2</sub> को कैप्चर करना
- 2) इसे परिवहन करना।
- 3) स्थायी रूप से गहरे भूमिगत में संग्रहीत करना। सीसीएस में कार्बन उत्सर्जन कहां संग्रहित किया जाता है?

- CO<sub>2</sub> उत्सर्जन के संभावित भंडारण स्थलों में खारे जलभृत या समाप्त हो चुके तेल और गैस भंडार शामिल हैं, जो आमतौर पर जमीन के नीचे 0.62 मील (1 किमी) या उससे अधिक गहराई में होने चाहिए।

- यू.के. में प्रस्तावित जीरो कार्बन हंबर परियोजना के लिए एक भंडारण स्थल 'एंड्योरेंस' नामक खारा जलभृत है, जो दक्षिणी उत्तरी सागर में, तट से लगभग 90 किमी दूर स्थित है। एंड्योरेंस समुद्र तल से लगभग 1 मील (1.6 किमी) नीचे है।

- अमेरिका में अलबामा में सिट्रोनेल प्रोजेक्ट जैसे कई बड़े पैमाने पर CO<sub>2</sub> साइटें हैं। यह खारा जलाशय इंजेक्शन साइट लगभग 1.8 मील (2.9 किमी) गहरी है।



## रोडमैप मैप: 2030 तक भारत में कार्बन कैप्चर और स्टोरेज

आशीष लाल  
प्रबंधक (मा सं)

कैगा सीएसआर समिति द्वारा बनाए गए दिनांक 16 जून 2025 को " गेराल-हेगार के बीच 3 कि.मी.कंक्रीट रोड" का उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री बी विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल और श्री शिवराम हेब्बार, विधायक, यल्लापुर-मुंडगोड-बनवासी साथ ही कैगा प्रबंधन वर्ग उपस्थित



दिनांक 06 अगस्त 2025 को कैगा सीएसआर समिति द्वारा उळवी ग्राम में सैनिटरी संकुल के निर्माण के भूमि पूजा के अवसर पर श्री बी विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल और कैगा प्रबंधन समिति



## 77वें हिंदी दिवस एवं 39वें एनपीसीआईएल स्थापना दिवस समारोह - 2025 के संयुक्त आयोजन

कैगा स्थल में दिनांक 17 सितंबर 2025 को 77वें हिंदी दिवस एवं 39वें एनपीसीआईएल स्थापना दिवस समारोह का संयुक्त आयोजन केजीएस, सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आदरणीय श्री बी. विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल सहित श्री के. श्रीराम, केंद्र निदेशक, केजीएस 1व2, श्री जे.एल.सिंह, परियोजना निदेशक, कैगा 5व6 एवं श्रीमती सुवर्णा एस. गावँकर, प्रमुख (मा. सं.), राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यगण भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम पौधा भेंटकर स्वागत के उपरांत कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान गणेश जी की वंदना से किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम स्थल निदेशक ने सभी को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई। तत्पश्चात, श्रीमती सुवर्णा एस. गावँकर, प्रमुख (मा. सं.) ने इस अवसर पर हिंदी दिवस और एनपीसीआईएल स्थापना दिवस की बधाई दी और मुख्य अतिथि सहित सभी का हार्दिक स्वागत कर राजभाषा हिंदी की संक्षिप्त जानकारी दी। इसके पश्चात श्री बसंत कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने भी हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर सभी को शुभकामनाएं दी और राजभाषा अनुभाग की गतिविधियों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

हिंदी दिवस के अवसर पर भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह से प्राप्त संदेश का वाचन श्री जे.एल. सिंह, परियोजना निदेशक, कैगा 5व6, ने किया। सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग, डॉ. ए. के. मोहंती के हिंदी दिवस संबंधी संदेश का वाचन श्री के. श्रीराम, केंद्र निदेशक, केजीएस 1व2, ने किया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनपीसीआईएल श्री भुवन चंद्र पाठक से प्राप्त हिंदी दिवस संबंधी संदेश का वाचन श्री ए.एल.वी.विक्रम रेड्डी, मुख्य अधीक्षक, केजीएस 3व4 ने किया।

कैगा स्थल में सितंबर 2025 में हिंदी पखवाड़े के दौरान 10 हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में लगभग 523 कार्मिकों ने भाग लिया जिनमें 134 कार्मिकों ने पुरस्कार प्राप्त किए। इस अवसर पर विजेताओं को मुख्य अतिथि के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए और निर्णायकों को भी सम्मनित किया गया।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम सभी को 77वें हिंदी दिवस एवं 39वें एनपीसीआईएल स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी और संदेश पठनकर्ताओं की सराहना की। 25 वर्षों की सेवा पूर्ण कर चुके कार्मिकों एवं हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को बधाई भी दी। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और राजभाषा में कार्य करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। केंद्र सरकार, सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रचार के लिए गंभीरता एवं सकारात्मक रूप से प्रयास कर रही है। आप सब बहुत रूचि और निष्ठा से कार्य करते हैं। खुशी की बात है कि हर तिमाही में हमारा पत्राचार का प्रतिशत लक्ष्य से अधिक ही रहता है। आप सभी स्वयं भी हिंदी में कार्य करें और अपने अधीनस्थ कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को भी राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अफ़रोज़ा बेगम, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं श्रीमती दीपा भट, निजी सचिव ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री राजेश कुमार पात्र, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) ने दिया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

राजभाषा में कार्य हम सभी  
का दायित्व है

## एनपीसीआईएल स्थापना दिवस एवं हिंदी दिवस समारोह का संयुक्त आयोजन



एनपीसीआईएल स्थापना दिवस एवं हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर मंचासीन मुख्य अतिथि श्री बी विनोद कुमार, श्री के. श्रीराम, श्री जे एल सिंह एवं श्रीमती सुवर्णा एस गांवकर

राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाते हुए मुख्य अतिथि श्री बी विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल



भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी से प्राप्त हिंदी दिवस संबंधी संदेश का वाचन करते हुए श्री जे. एल. सिंह, परियोजना निदेशक, कैगा 5व6

सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग डॉ. ए.के. मोहंती के हिंदी दिवस संबंधी संदेश का वाचन करते हुए श्री के श्रीराम, केंद्र निदेशक, केजीएस-1व2



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनपीसीआईएल, श्री बी. सी. पाठक से प्राप्त हिंदी दिवस संबंधी संदेश का वाचन करते हुए श्री ए एल वी विक्रम रेड्डी, मुख्य अधीक्षक, केजीएस 3व4

श्रीमती सुवर्णा एस.गांवकर, प्रमुख (मा.सं.) कैगा स्थल मंचासीन अतिथिगण एवं सभाजनों का स्वागत करती हुई

# 39वें एनपीसीआईएल स्थापना दिवस समारोह -2025 पर 25 वर्ष सेवा अवधि पूर्ण किए गए कार्मिकों का सम्मान



श्री शांता विश्राम हुल्सवार, तकनीशियन/एफ



श्री के बी बिजुमोन, वरिष्ठ तकनीशियन/एच 1



श्रीमती अरुणा राजेश नाईक, वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2



श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ तकनीशियन/एच 1



श्री संजीवकुमार बी नायक, वैज्ञानिक सहायक/एफ



श्री बालचंद्र एस नायक, वैज्ञानिक सहायक/एफ



श्री इम्मैनुएल गुरम, वरिष्ठ तकनीशियन/एच-1



श्रीमती स्मिता शेटी, वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2



श्रीमती जोली पी ऐसाक, वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2



श्री एस विनोद, वैज्ञानिक सहायक/एफ



श्री पांडुरंग नारायण कुबाल, वरिष्ठ तकनीशियन/एच



श्री राजीव विघ्नेश्वर मल्या, वैज्ञानिक सहायक/एफ



श्री भगबत साहू, वैज्ञानिक अधिकारी/जी



श्री चंद्र शेखरा, वरिष्ठ तकनीशियन/एच-1

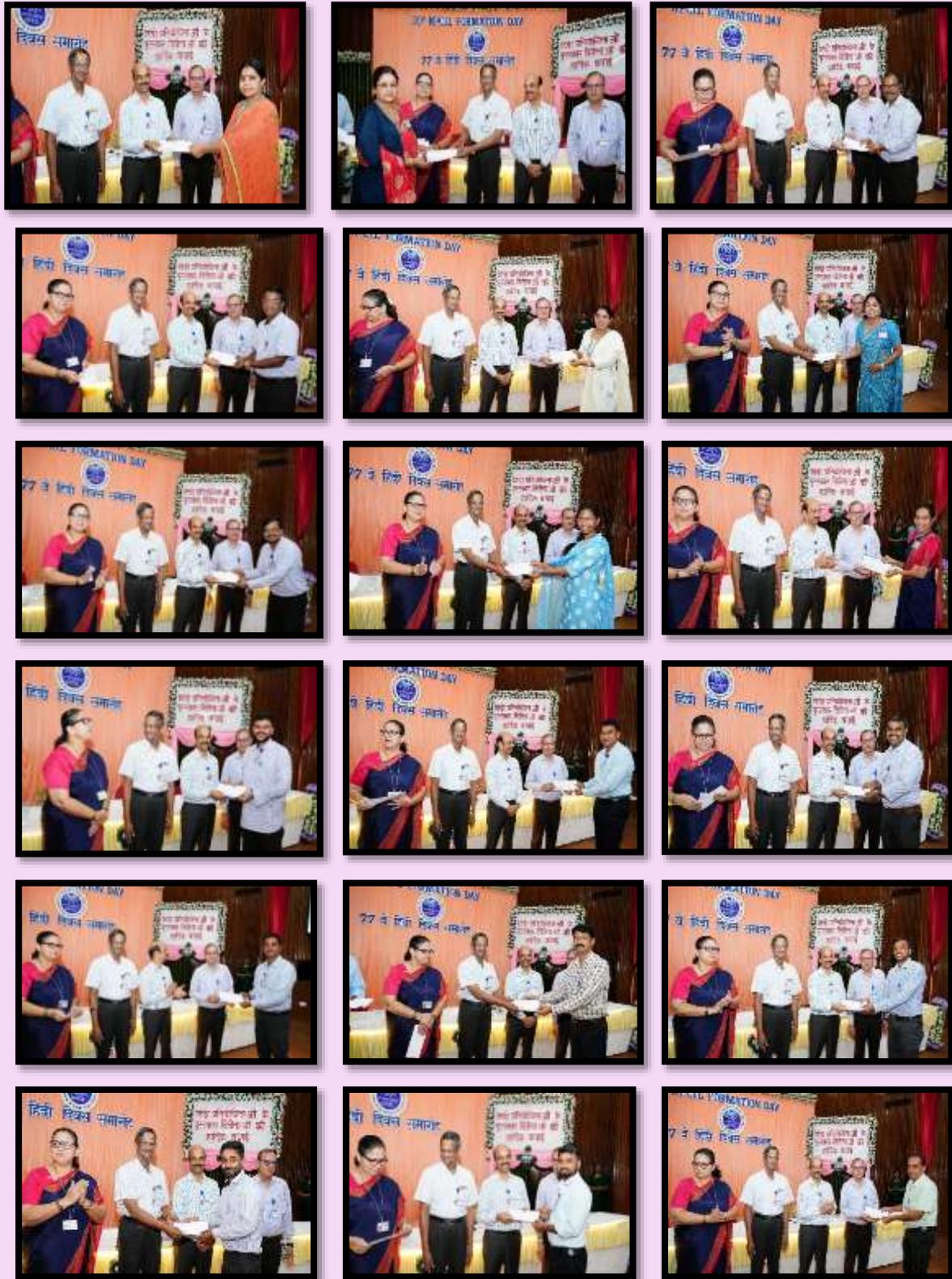


श्री राघवेंद्र वी नाईक, वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2



श्री अजय पाठक, वैज्ञानिक अधिकारी/जी

# हिंदी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कार्मिकगण



## कैगा स्थल में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कैगा स्थल में दिनांक 25 अगस्त 2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिनमें कुल 120 कार्मिकों अर्थात् अधिकारियों(62) और कर्मचारियों(58) ने भाग लिया। सर्वप्रथम समस्त मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुनील कुमार ओझा, केंद्र निदेशक, केजीएस 3व4 एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती सुवर्णा एस. गाँवकर, प्रमुख (मा.सं.) कैगा स्थल एवं श्री अजय थॉमस, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) कैगा स्थल उपस्थित थे। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा विधिवत दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन किया गया।

तत्पश्चात श्री बसंत कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत कर उन्हें शुभकामनाएं दी और कहा कि - हिंदी हमारी राजभाषा है। यह पूरे देश को जोड़ती है। कार्यशालाओं का आयोजन एक संवैधानिक आवश्यकता है। इनका उद्देश्य आपको हिंदी में काम करने हेतु होने वाली झिझक को दूर करना है। हमारी इकाई 'ग' क्षेत्र में होने पर भी यहाँ हिंदी में भी अच्छा काम हो रहा है। आप सब मुख्यालय द्वारा प्रदान किए गए कंठस्थ अनुवाद सॉफ्टवेयर के प्रयोग से कार्यालय के हिंदी पत्राचार को बढ़ा सकते हैं। आज पूरा दिन आप राजभाषा अनुभाग के

साथ हैं, व्याख्यानों को अच्छी तरह से सुनें और हिंदी में कार्य करने संबंधी जो भी आपकी शंका है उसका समाधान पाएं और अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जहाँ कहीं हिंदी का प्रयोग कर सकते हैं/ बढ़ा सकते हैं, अवश्य प्रयास करें। सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए कुछ प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की गई हैं, उनका भी लाभ उठाएं।

प्रथम सत्र में श्री बसंत कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा), कैगा स्थल ने हिंदी भाषा की पृष्ठभूमि बताते हुए 'संघ की राजभाषा नीति, नियमों और प्रावधानों' को विस्तार से बताया और श्रीमती अफ़रोज़ा बेगम एम. के., वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने लेखन में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी वर्तनी और देवनागरी लिपि का मानकीकरण' एवं हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। द्वितीय सत्र में श्रीमती बबीता शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने 'प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली' के बारे में और श्री पी. राजेंद्र, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने 'आपसे अपेक्षाएं और यूनिकोड' के बारे में बताया। सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला को सफल, ज्ञानप्रद और उपयोगी बताया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती अफ़रोज़ा बेगम एम. के., वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, ग्रेड-2 ने किया। कार्यशाला के सफल आयोजन में श्री पी राजेंद्र, वरिष्ठ अनुवादक, श्री प्रशांत श्रीवास्तव, असि.ग्रेड-1 ने सहयोग दिया।

**-राजभाषा अनुभाग, कैगा स्थल**



कभी-कभी जीवन अपनी असल सूरत ठीक उसी क्षण दिखा देता है, जब हम उसके लिये सबसे कम तैयार होते हैं। उन्हीं दिनों की बात है जब मैं काशी से निकलकर एनपीसीआईएल मुख्यालय में वैज्ञानिक अधिकारी-सी के साक्षात्कार को जा रहा था, घर की देहरी पर माता-पिता के चरणों को छूकर उनके धीमे- धीमे आशीर्वाद को माथे पर लगाते हुए जैसे कोई अदृश्य कवच ओढ़ लिया हो।

तृतीय वातानुकूलित श्रेणी का डिब्बा लोहे की साँस लेता हुआ पटरियों पर सरक रहा था, और खिड़की के पार पीछे छूटते खेत-खलिहान और गलियाँ आँखों में उतरती चली जाती थी। भीतर कहीं एक धुन सी बज रही थी - उम्मीद की, अनजाने भय की, और उस छोटे से गाँव की मिट्टी की जो मेरे जूतों के तलों से चुपचाप बोलती रहती है।

सुबह का वक्त था, चायवाले की तेज पुकार थम गई थी और डिब्बे की हवा में उबलते पानी की भाप घुली हुई सी थी। मैं हाथ-मुँह धोने वाश-बेसिन तक गया तो देखा, बगल से एक स्त्री अपने छह-सात महीने के शिशु को गोद में लिए धीमे-धीमे भीतर की ओर बढ़ रही थी, आँखों में रात भर की जाग और ओठों पर बच्चे की मुस्कान का अनगढ़ उजाला। ट्रेन ने तभी न जाने ब्रेक खाया या रफ्तार बदली एक ऐसा झटका कि जैसे समय ही ठिठक जाये - सब किसी अदृश्य हाथ से धकियाए से लड़खड़ा गये, उस एक लम्हे में, बेसिन के धुँधले शीशे में मुझे वह दृश्य दिखा जो आज भी भीतर तक काँपता है। स्त्री का तन डोलता हुआ, शिशु को भींचे हुए हाथ ढोले पड़ते हुए, और डिब्बे के खुले दरवाजे से ट्रेन के बाहर की ओर उसका शरीर बहता सा। ना जाने कैसे, उस एक सेकेन्ड में- ना सोच, ना तजवीज़ - मैं बिजली सा पलटा और अपना बाँया हाथ आगे बढ़ा दिया, उधर से किसी डूबते ने जैसे आखिरी तिनका थामने को हाथ फैलाया - हमारा हाथ आपस में अटका, फिसला, फिर जकड़ गया - और अगले ही पल हम तीनों जमीन पर नहीं, अपने-अपने धडकते दिलों पर टिके थे। स्त्री के आँखों में पानी था, पर वह रोई नहीं, बस शिशु को और कसकर सीने से लगा लिया, जैसे अपनी साँसे उसने बच्चे में फूँक दी हो। मेरे भीतर बिजली सी गूँज उठी - घुटनों में कंपन, हथेलियों में पसीना, और मन में वह एक पंक्ति - जाको राखे साईया मार सके ना कोय अर्थात जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, उसका बाल भी बाँका नहीं हो सकता।

सब कुछ एक-दो साँसों में हो गया - इतना शीघ्र कि नाम लेना भी कठिन, दावा करना तो दूर। सच कहूँ तो वहाँ मेरा कोई बड़ा पुरुषार्थ न था, यदि मैं एक पल देर से मुड़ता, यदि उसका हाथ एक रत्ती कम आगे बढ़ता, तो शायद मेरे जीवन का सबसे अक्षम्य दृश्य मेरी आँखों में गिर जाता, और मैं उम्र भर खुद को क्षमा नहीं कर पाता। उस क्षण में मैंने केवल इतना जाना कि हम सब किसी करुणा के ताने-बाने से बंधे हैं। कभी हम सहारा बनते हैं, कभी कोई अनजाना हमें उठाकर किनारे रख देता है। मेरे मन में गहरी तसल्ली उतर आयी। भगवान ने उन्हें बचाया और मुझे माध्यम बनाया, माध्यम होना भी शायद कृपा का ही दूसरा रूप है। स्टेशन दर स्टेशन शहर गुजरते गए, और मैं उस छोटी सी गोद और डगमगाती देह को याद करता रहा, सोचता, वह माँ अपने मन में कितने आशीर्वाद लेकर भीतर-भीतर क्या कह रही होगी। साक्षात्कार में जब प्रश्न आए, उत्तर जैसे उस स्त्री की स्थिर निगाहों की तरह साफ-साफ बह निकले, शब्दों में घबराहट नहीं थी, जैसे किसी ने भीतर की कम्पन को पहले ही पी लिया हो। लौटने के कुछ हफ्ते बाद जब परिणाम आया - चयन - और प्रशिक्षण के लिये काकरापार का बुलावा - तो सबसे पहले उसी डिब्बे की दीवारे याद आई, वही बेसिन, वही झटका और वह कंपकंपाती सी कृतज्ञता।

मैंने मन ही मन उस माँ को प्रणाम किया, जिसका नाम तक न जान सका। लगा, उसके अनकहे आशीर्वाद, मेरी पीठ पर हाथ बनकर टिके रहे और मेरी राह के पत्थरों को रुई की तरह हल्का करते गये। जीवन मुझे आज भी यही समझाता है - हम जो कुछ समझते हैं, वह अक्सर छलावा होता है, असल चीज वह करुणानिधि की करुणा है जो कहीं किसी दरवाजे पर खड़े होकर हमें गिरने से थाम लेती है, और हम सोचते रह जाते हैं कि हाथ हमारा था। शायद उसी को लोग ईश्वर कहते हैं, शायद वही बड़ों के आशीर्वाद में एक साधारण सा वाक्य बनकर उतर आता है, सावन की पहली फुहार की तरह, जो मिट्टी को भी चुपचाप जीवित कर देती है।



- वैभव मिश्रा  
वैज्ञानिक अधिकारी/सी, प्रचालन 3व4

## गोयार वॉटरफॉल की साइकिल यात्रा

मुझे साइकिल चलाना बेहद प्रिय है। रोज़ाना शाम को मैं लगभग 15 से 20 किलोमीटर साइकिल चलाती हूँ। लेकिन मन में हमेशा एक छोटा-सा सपना पल रहा था- क्यो न कभी साइकिल से गोयार वॉटर फॉल्स की यात्रा की जाए, जो कैगा टाउनशिप से लगभग 20 किलोमीटर दूर गोटेगाली के पास स्थित है।

यह विचार लंबे समय से मन में था। फिर एक दिन, दूसरे शनिवार की छुट्टी पर मैंने अपनी एक मित्र को

फ़ोन किया और कहा- " क्या तुम मेरे साथ गोयार वॉटर फॉल्स की

रोमांचक यात्रा पर चलोगी ? वह भी तुरंत राज़ी हो गई। तय हुआ कि हम सुबह-सुबह निकलेंगे।

यात्रा की शुरुआत -

**अंधियारे से उजाले की ओर**

सुबह 5:30 बजे, सितंबर की हल्की-सी ठंडी सुबह में, मैंने अपनी छोटी-सी झोली में थर्मस में चाय और कुछ बिस्कुट पैक किए। बाहर अंधेरा पसरा हुआ था, सड़कें सुनसान थीं।

जब हमने साइकिलों के पैडल मारे तो ठंडी हवा के झोंके चेहरे को छूकर जा रहे थे। दूर-दूर तक केवल झींगुरों की आवाज़ और कभी-कभी पत्तों की सरसराहट सुनाई देती थी।

उस समय साइकिल चलाने का अनुभव बिल्कुल अलग था। जैसे हम रात के सत्राटे को चीरते हुए धीरे-धीरे सुबह का स्वागत कर रहे हों। सड़कें संकरी थीं, दोनों ओर घना जंगल फैला था। बीच-बीच में पेड़ों से आती नमी की खुशबू और दूर से सुनाई देती पक्षियों की चहचहाहट—मानो प्रकृति धीरे-धीरे अपनी नींद से जाग रही हो।

**जंगल की राह - रोमांच और ताज़गी**

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, आसमान हल्का नीला होने लगा। जंगल के भीतर से गुजरते हुए हमें कभी मोर की पुकार सुनाई देती, तो कभी किसी अज्ञात पक्षी की मधुर ध्वनि। हवा इतनी ताज़ा थी कि हर सांस मानो मन को नया उत्साह भर रही थी।

हम दोनों साइकिल चलाते-चलाते कभी बातें करते, कभी चुपचाप उस शांति का आनंद लेते। सड़कें संकरी और टेढ़ी-मेढ़ी थीं, पर वही तो असली रोमांच था। लग रहा था जैसे हम किसी छिपे खज़ाने की ओर बढ़ रहे हों।

**गोयार वॉटरफॉल - प्रकृति की गोद में**

करीब डेढ़ घंटे बाद हम गोयार पहुँचे। वहाँ साइकिलें खड़ी करके हम पैदल वॉटरफॉल की ओर बढ़े। जैसे ही



झरने की आवाज़ पास आई, दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। और

अचानक—सामने था गोयार वॉटरफॉल!

सफ़ेद झाग उगलता पानी, ऊँचाई से गिरते हुए बूँदों की फुहारें, और उसके चारों ओर हरा-भरा जंगल।

सूरज की पहली किरणें जब पानी पर पड़ीं तो ऐसा लगा जैसे किसी ने चाँदी की परत बिछा दी हो।

हमने वहाँ डुबकी लगाई। ठंडे पानी ने शरीर और मन दोनों को तरोताज़ा कर दिया। पानी में तैरते-तैरते हमें बिल्कुल बचपन जैसा आनंद आया।

**चाय, बिस्कुट और दोस्ती**

नहाने के बाद हमने पेड़ के नीचे बैठकर गरमा-गरम चाय और बिस्कुट का आनंद लिया। वह साधारण-सी चाय भी उस जंगल और झरने के माहौल में किसी अमृत से कम नहीं लगी।

फिर से पानी में उतरकर थोड़ी और मस्ती की, झरने की धाराओं में खेलते रहे और जब सूरज थोड़ा ऊपर चढ़ आया तो वापसी की तैयारी की।

**वापसी का सफ़र - मुस्कान और संतोष**

साइकिल से लौटते समय थकान थी, लेकिन मन में अपार संतोष था। रास्ते में पक्षियों का संगीत, हवा की ठंडक और चेहरे पर मुस्कान—सब कुछ इस यात्रा को अमर बना रहे थे।

**अनुभव**

यह साइकिल यात्रा मेरे जीवन की उन यादों में से है जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा/पाऊँगी। यह केवल एक साइकिल राइड नहीं थी, यह प्रकृति के साथ एक आत्मीय संवाद था, यह दोस्ती और साहस का उत्सव था।

सच कहूँ तो उस दिन मुझे लगा कि जीवन की सबसे बड़ी खुशियाँ अक्सर सरल पलों और छोटे-छोटे रोमांचों में छिपी होती हैं।

**-भव्या भट**

**तकनीशियन/एफ, प्रचालन 1व2**

## विदाई समारोह (अप्रैल – सितंबर 2025)



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री रामचंद्र नारायण हेब्बार



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री अरुण नारायण पवार



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री रमेश कृष्णाजी भुसारे



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री जगदीश तिमप्पा नाईक



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री सुरेश सोमा नाईक



अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त श्री रामचंद्र एच नेत्रेकर



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री राघवेंद्र वी मनोहर



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री अमोल रेवणकर



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री बसवराज जी शिरहट्टी



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री के एम उज्जप्पा



मई 2025 में सेवानिवृत्त सुश्री यास्मिन हारुन शेख



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री उमर खान



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्री जेरेमी मिनिन डिसौजा



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती शारदा एम गौडा



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती शशिकला एस बोरकर



मई 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती शारदा आर कर्की



जून 2025 में सेवानिवृत्त श्री पुट्टराजु फकीरप्पा पंडित



जून 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती अनिता जे कलस



जून 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती वनिता एस नाईक



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्री के पुट्टराजु



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्रीमती देविदया ए नाईक



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्री अंथोनी एडवर्ड



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्री राजन राया सालुंके



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्री रामदास कृष्णा देवली



जुलाई 2025 में सेवानिवृत्त श्री पी आर सुंदरकुमार



अगस्त 2025 में सेवानिवृत्त श्री बी एस नागनूरी



अगस्त 2025 में सेवानिवृत्त श्री सी एस दोड्डुमनी



अगस्त 2025 में सेवानिवृत्त श्री सतीश रामा अंकोलेकर



सितंबर 2025 में सेवानिवृत्त श्री वेंकटेश जे भट



सितंबर 2025 में सेवानिवृत्त श्री सदानंद एम बग्गोण



अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गृह मंत्रालय भारत सरकार श्री बी नागराज रेड्डी, सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक से वर्ष 2024-2025 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पुरस्कार प्राप्त करते श्रीमती सुवर्णा एस.गांवकर, प्रमुख(मानव संसाधन), कैगा स्थल एवं श्री बसंत कुमार सिंह, उप प्रबंधक(राजभाषा), कैगा स्थल

## घड़ी-घड़ी मेरा दिल धड़के

दिल धड़कना जीवन की निशानी है और बंद हो जाना ..... ईश्वर न करें कि वह 'घड़ी' जल्दी आ जाय; फिर वह घड़ी-घड़ी, बार-बार, 'थोड़ी-थोड़ी देर में', 'जल्दी-जल्दी' धड़क रहा है तो क्या बुरी बात है। 'घड़ी' – समय यंत्रिका, टाइमपीस का दिल भी जब धड़कना बंद हो जाता है, वह बंद हो जाती है।

'रिस्टवॉच' (कलाई घड़ी), क्लॉक, दीवार घड़ी, टाइमपीस-समय बताने के यंत्र के अर्थ में 'घड़ी' शब्द का प्रयोग बहुत पुराना नहीं है; क्योंकि इस तरह के आविष्कार को मुश्किल से छह सौ बरस ही हुए हैं और जो आविष्कार हुआ वह विशालकाय घड़ी का था, जो घंटाघर या विशाल कक्ष में ही लगायी जा सकती थी और समय भी आज की तरह बराबर नहीं देती थी। उस घड़ी की सुइयां भी दो नहीं, सिर्फ एक थी।

फिर बनी स्प्रिंग, पेंडुलमवाली घड़ियां, चाबी भरकर चलनेवाली घड़ियां, बिजली से चलनेवाली घड़ियां और अब बैटरी से चलनेवाली घड़ियां। समय के साथ भारी भरकम घड़ियों के आकार, डिजाइन छोटे से छोटे और खूबसूरत होते गये। भारत में पहली घड़ी ब्रिटिश शासन काल में यूरोप में भारत कब आयी, इसकी सही जानकारी नहीं है; लेकिन समय मापक इस आविष्कार के लिए 'घड़ी' शब्द उसी समय प्रचलन में शुरू हुआ।

अगर मैं कहूँ कि 'घड़ी' शब्द 'घड़े' से बना तो आपको अविश्वसनीय लगेगा; लेकिन यह सौ फ्रीसदी सच है। कैसे? समय नापने के लिए भारत में जो सबसे पहली तरकीब हज़ारों वर्ष पहले अपनायी गयी वह भी घड़े में पानी भर कर उसके नीचे एक छेद कर खाली होने के लिए पानी गिरते रहते देना। उन्होंने उस छेद का आकार सुनिश्चित किया, ताकि घड़ा 24 मिनट में खाली हो जाय।

इस तरह समय की अवधि जलघट से गिनी जाती थी। हिंदी-उर्दू तथा कुछ अन्य भारतीय भाषाओं का 'घड़ी' शब्द संस्कृत के 'घड़ा' अर्थवाची 'घट' शब्द से अल्पार्थ में बने 'घटिका' से प्राकृत से होते हुए आया है। प्राकृत में 'घटिका', 'घटिआ' ने 'घड़िया' शकल अख्तिायार कर ली। घड़ा, घड़िआ से 'घड़ि', 'घड़ी' शब्द इसी वंश-परंपरा का है। घड़े में पानी के स्थान पर बालू भर कर नीचे छेद कर उसके खाली होने की 24 मिनट की समान समय अवधि को भी संस्कृत में 'घट' के नाम पर विकसित अर्थ में भी 'घट' ही कहते थे। उस समय 'मिनट' या

समय बतानेवाली 'घड़ी' और पानी के 'घड़े' में क्या ऐतिहासिक संबंध? बजाये जानेवाले 'घंटे' का एक नया अर्थ 60 मिनट कैसे विकसित हो गया ? क्या आपके दिल की 'घंटी' कभी बजी है ?

'सेकेंड' शब्द नहीं था। चौबीस मिनट की गणना आज की समय गणना के आधार पर है। इस तरह उस युग के 24 मिनट को अगर मैं 'पल' और 'क्षण' कहूँ तो 'मिनटोंवाली' बात नहीं बनेगी।

अब आधुनिक हिंदी कोशों में 'घड़ी', 'घट' का अर्थ 24 मिनट के बदले 'एक घंटा' हो गया है। 'घड़ी' का अर्थ 'वॉच', 'क्लॉक' के अलावा 'समय-अवधि' भी उतने ही प्रचलन में है, जैसे बुरी घड़ी आ ही गयी। यहां 'घड़ी' समय के किसी खास बिंदु की ओर संकेत करता है। अगर कोई घड़ी-दो-घड़ी को मेहमान हो तो समझा जाएगा कि वह घंटे का मेहमान है।

विश्व की सर्वप्रसिद्ध धूपघड़ी दिल्ली में है, जो 'जंतरमंतर' के नाम से जानी जाती है। हम ऐतिहासिक घड़ी की बात छोड़कर अब उन घड़ियों पर आते हैं जो आधुनिक घड़ियों का निर्माण शुरू होने पर शुरू-शुरू में केवल तहसीलों, बड़े सरकारी दफ्तरों और रेलवे स्टेशनों पर लगायी गयी। तब हर घंटे बाद तहसील मे लगी घड़ी के आधार पर पीतल सा कांसे का बना घंटा ज़ोर से बजाया जाता था, जैसे 11 बजने पर यह घंटा 11 बार बजाया जाता था, तीन बजने पर सिर्फ तीन बार। हर 60 मिनट बाद घंटा बजाये जाने पर 'घंटा' का नया अर्थ विकसित हुआ '60 मिनट'। उस युग में शहर में 'घंटाघर' भी बने।

प्राचीन भारत में संस्कृत व प्राकृत में 'घंटा' का अर्थ केवल 'घड़ियाल' था जिसे बजाकर कोई सूचना दी जाती थी या पूजा के समय बजाया जाता था।

घंटा का 60 मिनट अर्थ विकसित हुए लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूरे हुए हैं। तहसीलों की तरह थानों में भी घंटा बजाकर समय की सूचना दी जाने लगी थी।

इस तरह 'घंटा' का अर्थ समय के थपेड़े खाकर बदल गया, हो गया 3600 सेकेंड; लेकिन घंटी का अर्थ मिनट, सेकेंड में नहीं बदला। हां, मराठी में 'घड्याळ' का अर्थ 'घड़ी' हो गया है।

'घंटा' मरदाना शब्द है, 'घंटी' ज़नाना। 'घंटा' की आवाज़ कर्कश या कान फोड़ने वाली भी हो सकती है; लेकिन 'घंटी' की आवाज़ मधुर होती है। शायद यही कारण है कि दिल की घंटी भी बज उठती है। जिसके दिल में बजती है, वही उसकी आवाज़ सुनता है या वह सुनता है जिसके लिए वह बजती है। यह ऐसी आवाज़ है, जो कभी किसी को भी सुनाई नहीं देती है।

**साभार - आनन्द गहलोत द्वारा लिखित सफर शब्दों का**

## मेरा अनुभाग



आज के डिजिटल युग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में, केवल पारंपरिक मानव संसाधन प्रबंधन कार्य नहीं करता। कर्मचारियों की विविधता, उनकी बदलती अपेक्षाएं, और उनकी भलाई की आवश्यकता ने मानव संसाधन प्रथाओं को पुनर्परिभाषित करने की जरूरत पैदा कर दी है। इसी संदर्भ में, मेरा अनुभाग - मानव संसाधन प्रबंधन ने जन्म लिया है — एक ऐसा मॉडल जो कर्मचारियों के व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और जरूरतों को केंद्र में रखता है।

### ❖ मानव संसाधन प्रबंधन के अतिरिक्त पहलू :

#### 1. स्मार्ट लीडरशिप

स्मार्ट लीडरशिप का अर्थ है ऐसी नेतृत्व शैली जो कर्मचारियों की भावनाओं और समस्याओं को समझे, उनके सुझावों को सुने, और सहानुभूतिपूर्ण तरीके से निर्णय ले। नेताओं को कोचिंग, मेंटरिंग, और प्रेरणा के माध्यम से कर्मचारियों का मार्गदर्शन करना होता है। इस दृष्टिकोण से कर्मचारी और प्रबंधन के बीच विश्वास और सहयोग का सेतु बनता है।

#### 2. व्यापक समावेशन

विविधता केवल लिंग या जाति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विचारों, कार्यशैली, अनुभव, उम्र, और मानसिकता की भी विविधता शामिल है। मेरा अनुभाग इस व्यापक समावेशन को बढ़ावा देता है ताकि हर कर्मचारी अपने आप को सम्मानित और स्वीकार किया महसूस करे।

#### 3. अनुकूलनशील प्रशिक्षण

कर्मचारी अलग-अलग पृष्ठभूमि और सीखने की गति से आते हैं। इसलिए, प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लचीला और अनुकूल बनाना आवश्यक होता है। मेरा अनुभाग डिजिटल लर्निंग, माइक्रो-लर्निंग जैसी तकनीकों का इस्तेमाल करता है, जिससे प्रशिक्षण अधिक प्रभावी और दिलचस्प बन जाता है।

#### 4. कर्मचारी कल्याण तकनीक

आज के समय में, स्वास्थ्य ट्रेकिंग ऐप्स, मानसिक स्वास्थ्य चैटबॉक्स, और वर्चुअल हेल्थ काउंसलिंग जैसी तकनीकों के माध्यम से कर्मचारी कल्याण को बढ़ावा दिया जा रहा है। मेरा अनुभाग इन तकनीकों को अपनाकर कर्मचारियों के स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति की निरंतर निगरानी करता है और तुरंत सहायता उपलब्ध कराता है।

#### 5. सामाजिक ज़िम्मेदारी और मानवीय मूल्य

कर्मचारी आज ऐसे संगठन की तलाश में हैं जो न केवल मुनाफे पर ध्यान दे, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को भी गंभीरता से ले। मानव संसाधन प्रबंधन ऐसे कार्यस्थलों का निर्माण करता है जहाँ सामाजिक जिम्मेदारी के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को भी बढ़ावा दिया जाता है।

### मानव संसाधन प्रबंधन की व्यावहारिक रणनीतियाँ :

- कर्मचारियों और प्रबंधन दोनों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करना, जिससे वे एकदूसरे की-भावनाओं को समझ सकें और उचित प्रतिक्रिया दे सकें। यह टीम की सहमति, विवाद समाधान और संचार में सुधार लाता है।
- कर्मचारियों के पूरे कार्यकाल के अनुभव को मैप करना, जिससे यह समझा जा सके कि कहाँ सुधार की जरूरत है और किन पहलुओं ने कर्मचारियों को प्रभावित किया है।
- कर्मचारियों को न केवल अपनी भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, बल्कि उन्हें नए विचार, प्रक्रियाएं और प्रोजेक्ट्स शुरू करने की आज़ादी भी दी जाती है।
- **मेरा अनुभाग** एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देता है जहाँ कर्मचारी निरंतर सीखने, स्वयं को अपडेट करने, और अपने कार्य में सुधार करने के लिए प्रेरित होते हैं। इसमें नियमित कार्यशालाएं, वेबीनार, और सीखने के लिए संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं।

### ❖ मानव संसाधन प्रबंधन का दीर्घकालिक प्रभाव :

- कर्मचारियों की संतुष्टि और जुड़ाव से संगठन की स्थिरता बढ़ती है। कम कर्मचारी टर्नओवर के कारण संगठन का अनुभव और ज्ञान सुरक्षित रहता है।
- एक सशक्त और प्रेरित कार्यबल के कारण उत्पादन में सुधार होता है, जिससे संगठन की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।
- कार्यस्थल पर सहयोग, सम्मान और पारदर्शिता जैसी सकारात्मक संस्कृतियाँ विकसित होती हैं, जो नए कर्मचारियों को आकर्षित करती हैं।
- एक ऐसा संगठन जो अपने कर्मचारियों को महत्व देता है, उसे बाजार में एक बेहतर ब्रांड प्रतिष्ठा मिलती है, जो ग्राहक और निवेशक दोनों के लिए आकर्षक होता है।

### ❖ अंतिम विचार :

**मानव संसाधन प्रबंधन** कर्मचारियों के अनुभव, भलाई, और विकास का एक समग्र दृष्टिकोण है। यह संगठन को मानव केंद्रित, तकनीक समर्थित और भविष्य उन्मुख बनाता है। ऐसे में यह आवश्यक है कि संगठन इस आधुनिक **मानव संसाधन** मॉडल को अपनाएं और अपने कर्मचारियों को "मेरा अनुभव" की भावना दें ताकि वे पूरी लगन और प्रतिबद्धता के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

अनंतनरसिंह उपाध्याय  
निजी सचिव

## मेरा अनुभाग

मेरा विभाग स्वास्थ्य भौतिकी विभाग है, जिसका मुख्य काम परमाणु ऊर्जा संयंत्र में काम करने वाले कर्मचारियों और आसपास के पर्यावरण एवं सामान्य जनता को विकिरण से सुरक्षा सुनिश्चित करना होता है।

स्वास्थ्य भौतिकी विभाग के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं:

### 1. रेडिएशन मॉनिटरिंग (Radiation Monitoring) अर्थात विकिरण:

विकिरण चार प्रकार के होते हैं – अल्फा (Alpha), बीटा (Beta), गामा (Gamma) और न्यूट्रॉन (Neutron) किसी भी कार्यक्षेत्र में बीटा, आल्फा, गामा या न्यूट्रॉन की जाँच की जाती है। इसके जाँच द्वारा मनुष्य को इन विकिरण के प्रभावों से बचाया जा सकता है।

विकिरण को न हम देख सकते हैं, न ही छू सकते हैं और न ही हम महसूस कर सकते हैं। विकिरण के प्रभाव को जांचने के लिए डोजीमीटर का प्रयोग किया जाता है।

किसी भी विकिरण कार्यस्थल में प्रवेश करने से पहले, व्यक्ति को टीएलडी (TLD) पहनना अनिवार्य है।

कार्मिकों द्वारा पहने जाने वाले डोजीमीटर (Dosimeter) जैसे टीएलडी (TLD), ईपीडी EPD (Electronic Dosimeter) या न्यूट्रॉन बैडज़ (Neutron badge) आदि की निगरानी की जाती है।

### 2. रेडिएशन सुरक्षा (Radiation Protection):

i) विकिरण के प्रभाव को कम करने के लिए टाइम डिस्टेंस (Time Distance), और शील्डिंग (Shielding) का उपयोग किया जाता है।

अर्थात जितना संभव हो कम समय में विकिरण कार्यक्षेत्र में कार्य समाप्त करना, अधिक से अधिक विकिरण रहित क्षेत्र से दूरी रखना और विकिरण के रोकथाम के लिए शील्डिंग वस्तुओं का प्रयोग करना।

विकिरण सुरक्षा के लिमिट रेडिएशन शील्डिंग (Shielding) का सही उपयोग सुनिश्चित करना।

ii) कार्मिकों को सुरक्षित डोज लिमिट के अंदर रखना, इसके लिए अलारा (ALARA) का उपयोग करना

### 3. कंटामिनेशन मॉनिटरिंग (Contamination Monitoring):

- सतह, उपकरण और कार्मिकों पर रेडियोधर्मी संदूषण (contamination) की नियमित जाँच करना।

- डिकन्टामिनेशन (Decontamination) गतिविधियाँ करना। व्यक्तिगत डिकन्टामिनेशन (Personal Decontamination) या इक्विपमेंट डिकन्टामिनेशन (Equipment Decontamination) आदि गतिविधियाँ सुचारू रूप से करना।

### 4. पर्यावरणीय निगरानी

#### Environmental surveillance:

- हवा, पानी, मिट्टी, दूध और भोजन में रेडियोधर्मिता की जाँच करना।

- न्यूक्लियर पॉवर प्लांट (Nuclear Power Plant) के आस-पास रहने वाली जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करना स्वास्थ्य भौतिक विभाग की जिम्मेदारी है।



### 5. रेडियोएक्टिव वेस्ट मेनेजमेंट (Radioactive Waste Management)

- तरल ठोस और गैसीय (Solid, Liquid and gaseous waste) रेडियोधर्मी अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान।

- रेडियोधर्मी अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान के लिए नियमों (AERB/IAEA guidelines) का पालन करना।

### 6. इमरजेंसी प्रिपेडनेस (Emergency Preparedness)

- आम जनता और कार्मिकों की सुरक्षा के लिए आपातकालीन स्थिति का योजना करना।

- किसी भी विकिरण दुर्घटना या लीकेज (Leakage) स्थिति में त्वरित कार्यवाही करना। इसको सुनिश्चित करने के लिए सभी न्यूक्लियर पॉवर प्लांट (Nuclear Power Plant) में प्लांट इमरजेंसी (Plant Emergency), साइट इमरजेंसी (Site Emergency) और ऑफसेट इमरजेंसी (Oddsite Emergency) का निर्धारित समय पर अभ्यास करना।

### 7. शिक्षा और प्रशिक्षण (Education & Training)

- कार्मिकों को विकिरण सुरक्षा उपकरणों, पी.पी.ई.स (PPEs) Personal protective Equipment जैसे ग्लोव्स (gloves), रेस्पिरेटर (Respirator), लैब कोट (Lab Coat) इत्यादि का सही तरीके से उपयोग पर प्रशिक्षण देना।

- विकिरण से संबंधित जागरूकता फैलाना। इसके लिए ऑरेंज क्वालिफिकेशन (Orange qualification), ग्रीन क्वालिफिकेशन (Green qualifications) का प्रशिक्षण करना।

### 8. डोज़ असेसमेंट (Dose Assessment)

- प्रत्येक व्यक्ति को मिल जाने वाली विकिरण मात्रा (Radiations Dose) का आकलन करना।

- इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों से तुलना करना। स्वास्थ्य भौतिकी गतिविधियाँ विकिरण से जुड़े हर काम को सुरक्षित बनाने और जनता, कार्मिकों, पर्यावरण और भविष्य की पीढ़ियों को सुरक्षित रखने पर केंद्रित होती हैं।

एम. सुमति  
वैज्ञानिक सहायक/जी, स्वा भौ. अ.

## कैगा स्थल की छःमाही प्रगति रिपोर्ट

कर्नाटक राज्य के उत्तर कन्नड जिले के पश्चिमी घाट के मनोरम, वनाच्छादित क्षेत्र कैगा में स्थित कैगा बिजली उत्पादन केंद्र में, स्वदेश विकसित 220 मेगावाट प्रत्येक विद्युत क्षमता वाले दाबित भारी पानी रिएक्टरों की चार इकाइयाँ स्थापित हैं।

### कैगा स्थल में इकाईवार प्रगति(01 अप्रैल 2025 से 30 सितंबर,2025 तक की अवधि) का विवरण निम्नानुसार है: केजीएस 1व2 की प्रगति रिपोर्ट

1) केजीएस - 1 रिएक्टर दिनांक 17 जनवरी 2024 से निरंतर प्रचालनरत रह कर ईएमसीसीआर - ईएमएफ़आर गतिविधियों को आरंभ करने तक दिनांक 31 मार्च 2025 को अपने मैनुअल शटडाउन से पूर्व 439 दिनों तक निरंतर प्रचालनरत रही तथा दिनांक 01/04/2025 से प्रोजेक्ट मोड घोषित किया गया। केजीएस - 1 के ईएमसीसीआर - ईएमएफ़आरके दौरान किए गए मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

1. सभी शीतलक चैनलों से ईंधन निष्कासित किया गया।
2. पीएचटी प्रणाली, D<sub>2</sub>O अपवाहन(ड्रेनिंग), हल्के जल से पीएचटी प्रणाली प्रधावन(फ्लशिंग)एवं डाउनग्रेडेड पानी को ड्रेन कर सुखाना।
3. नॉर्थ एवं साउथ एफ़एम वाल्ट में फ़्रीडर और हीडर इन्सूलेशन पेनल कटिंग करना। दोनों एफ़एम वाल्टों में सभी 306 फ़्रीडरों को काटना एवं उनका निपटान करना।
4. नॉर्थ एवं साउथ एफ़एम वाल्ट में क्रेन स्थापन एवं भार परीक्षण करना।
5. दोनों एफ़एम वाल्टों से सभी 303 चैनलों के लिए प्रेशर ट्यूब(पीटी) कटिंग करना।
6. दोनों एफ़एम वाल्टों में से सभी 303 चैनलों के शॉक एब्ज़ॉर्बर एसेम्बली को निकालना।
7. दोनों एफ़एम वाल्टों में से सभी 303 चैनलों के लिए एजीएमएस बेलो लिप कटिंग कर अलग करना।
- 2) केजीएस इकाई - 1 व 2 ने अब तक **16** बार 300 दिनों से अधिक दिनों तक प्रचालनरत रही जिसमें केजीएस 1व2 ने 12 बार 365 दिनों तक निरंतर प्रचालन किया और 05 बार 500 दिनों का निरंतर प्रचालन किया है।
- 3) केजीएस -2 इकाई ने वित्त वर्ष में **895.703** एमयू का उत्पादन किया और क्षमता गुणांक **92.7%** तथा उपलब्धता गुणांक **92.23 %** रहा है।
- 4) वित्त वर्ष के दौरान कोई औद्योगिक दुर्घटना नहीं हुई और 9012 दिनों का अग्नि दुर्घटना मुक्त प्रचालन पूर्ण

किया। 04 जून 2025 को एक संविदा कार्मिक(प्रचालन आइलैंड के बाहर) को रिपोर्टेबल चोट से पूर्व बिजलीघर ने 2311 दिनों की दुर्घटना मुक्त अवधि पूर्ण कर चुकी है।

- 5) वित्त वर्ष के दौरान ईएमसीसीआर/ईएमएफ़आर तथा केजीएस 2 प्रचालनरत रहते हुए **439.62** किलोग्राम भारी पानी का नुकसान हुआ, इसे पीएसडी के दौरान आंतरिक एवं बाहरी प्रणालियों के रिसाव को कम करके पीएचटी सिस्टम से एस्केप दर को न्यूनतम करने और भारी पानी की प्रभावी वसूली के द्वारा प्राप्त किया गया।
- 6) वित्त वर्ष में, केजीएस -2 में, वानो रसायन निष्पादन संसूचक (सीपीआई) के 1.0 को बनाए हुए है।

### पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ:

- केजीएस 1व2 को निर्धारण वर्ष 2023 से 2024 के लिए राष्ट्रीय संरक्षा परिषद, कर्नाटक चैप्टर के 'उन्नत सुरक्षा पुरस्कार-2025 से सम्मानित किया गया।  
'उन्नत सुरक्षा पुरस्कार-2025 प्राप्त करते श्री वी.के.नागरिक, मुख्य अधीक्षक, केजीएस-1 व 2



### केजीएस 3व4 इकाई की प्रगति रिपोर्ट

1. उक्त अवधि में केजीएस इकाई - 3 ने 829.89 एमयू उत्पादन किया।
2. उक्त अवधि में केजीएस इकाई - 4 ने 1044.68 एमयू उत्पादन किया।
3. केजीएस इकाई- 3 की द्विवार्षिक शटडाउन गतिविधियाँ 19 जून 2025 से 26 जुलाई 2025 तक सफलतापूर्वक निष्पादित की गई।
4. केजीएस 3व4 की निगम पीयर समीक्षा 27 अप्रैल 2025 से 07 मई 2025 तक आयोजित की गई।
5. केजीएस-3 में बीएसडी के दौरान 30 जून 2025 से 05 जुलाई 2025 तक निगम पीयर समीक्षा आयोजित की गई।
6. संयंत्र आपातकालीन अभ्यास 13 जून 2025 को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

7. केजीएस-3 बीएसडी नियामक निरीक्षण दिनांक 23 जून 2025 से 25 जुलाई 2025 तक आयोजित किया गया।
8. केजीएस-3 में तिमाही नियामक निरीक्षण दिनांक 23 सितंबर 2025 से 26 सितंबर 2025 तक आयोजित किया गया।
9. 25 अगस्त 2025 को मीडिया आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

### **पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ :**

- केजीएस 3व4 को प्रतिष्ठित "एनपीसीआईएल संरक्षा पुरस्कार 2024" का उपविजेता घोषित किया गया।
- केजीएस 3व4 को राष्ट्रीय संरक्षा परिषद, कर्नाटक चैप्टर के 'उन्नत सुरक्षा पुरस्कार-2025 से सम्मानित किया गया।



**"एनपीसीआईएल संरक्षा पुरस्कार 2024" प्राप्त करते श्री वी नागरिक, मुख्य अधीक्षक, केजीएस-1व2**



**"उन्नत सुरक्षा पुरस्कार-2025" प्राप्त करते श्री ए.एल.वी.विक्रम रेड्डी, मुख्य अधीक्षक, केजीएस-3व4**

### **कैगा-5&6 परियोजना की प्रगति रिपोर्ट**

वैधानिक स्वीकृतियाँ: दिनांक 18/11/2020 को परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद द्वारा स्थल सहमति मंजूरी प्राप्त हुई। MoEFCC द्वारा पर्यावरणीय मंजूरी: सर्वप्रथम 05/08/2019 को जारी की गई थी तथा 11/07/2025 को 15 वर्षों के लिए पुनःवैधता प्रदान की गई जो कि 04/08/2034 तक वैध है। प.ऊ.नि.प. से खुदाई की अनुमति 31/03/2022 में स्वीकृत की गई थी। इसकी वैधता अवधि 31/03/2026 तक बढ़ा दी गई है।

### **मुख्य संयंत्र सिविल कार्य:**

**इकाई -5** - एनबी-5, एसएबी 5ए और एसएबी-5ए एवं 5बी में लेवलिंग कोर्स पीसीसी कार्य पूर्ण। एनबी-5 और एसएबी



5बी में समेकित ग्राउटिंग कार्य पूर्ण। एनबी-5 में एसएबी 5बी फाउंडेशन स्तर तक इंजीनियर्ड पीसीसी पूर्ण और एसएबी 5बी में कार्य प्रगति पर हैं।

**निर्माणाधीन कार्यालय भवन  
गुणवत्ता आश्वासन काम्प्लेक्स**

**इकाई -6:** एनबी -6, एसएबी -6ए और एसएबी -6बी में ज्योलॉजिकल मैपिंग कार्य पूर्ण। एनबी -6 में लेवलिंग कोर्स पीसीसी एवं ड्रिलिंग हेतु समेकित ग्राउटिंग प्रगति पर है। एसएबी -6बी, एसएबी-6ए व 6बी के लिए अनुरूपगत जियोटेक्नीकल जांच पूर्ण की गई।

**अन्य भवन:** नियंत्रण भवन की जियोलॉजिकल मैपिंग, एफओएसए-6, डब्ल्यूएमपी, एसआरईएच, एसआरपीएच एवं एफ डब्ल्यूपीएच पूर्ण; जियोटेक्नीकल जांच, न्यूक्लियर



प्यूल बल्क स्टोरेज भवन(एनएफबीएसबी) में इंजीनियर्ड पीसीसी कार्य, एफ/एच एवं मैकिनकल वर्कशॉप में लेवलिंग कोर्स पीसीसी प्रगति पर है।

**टरबाइन आइलैंड पैकेज:** अगस्त 2025 तक जियोटेक्नीकल जांच कार्य(वन प्लेट लोड जांच को छोड़कर) दूसरा व तीसरा बैचिंग प्लांट इंस्टॉल्ड एवं प्रचालनार्थ। ईबीबी-5 में पीसीसी पूर्ण; टीबी-5 एवं टीबी-6 प्रगति पर है। ईबीबी-5 में समेकन ग्राउटिंग कार्य पूर्ण किया गया। न्यूक्लियर आइलैंड मेगा ईपीसी पैकेज(एनअपईएमईपी-मेसर्स एमईआईएल) 23 अप्रैल 2025 (का.आ. 0047) को प्रदान किया गया। इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास कार्य प्रगति पर है। एम45 कॉक्रीट मिक्स डिज़ाइन, बैचिंग प्लांट ट्रायल, कॉक्रीट मटेरीयल्स, वाटर प्रूफिंग एवं कूप्लर्स पूर्ण। 60 Cum/hr बैचिंग प्लांट (बीपी-1) सहित चिल्लर एवं आइस प्लांट

आरम्भ किया गया। कॉंक्रीट परीक्षण लैब कमीशन की गई।  
आयरन बार स्थल पर प्राप्त हुए हैं।

**1. योजना एवं दस्तावेज़ीकरण : डायटरी सर्वेक्षण (का.आ.सं.500068) चल रहा है;** प्रथम वर्ष की प्रगति रिपोर्ट अगस्त 2025 में प्रस्तुत कर दी गई है। पीएलएम में रिलीज़ किए गए निर्माण ड्राइंग अप्रैल में 15,843 से बढ़ कर सितंबर में 22,018 हो गए हैं।

**2. पाइपिंग, रिएक्टर एवं विद्युत**

पाइपिंग: एसजी-3 व एस-4 के लिए स्टोरेज शेडों का निर्माण कार्य प्रगति है।

रिएक्टर: 850 प्रेशर ट्यूब में से 540 (मई में 108 और सितंबर में 432) प्राप्त हुए हैं।

विद्युत : स्थल पर विद्युत आपूर्ति निर्माण कार्य पूर्ण किया गया है।

**3. सिविल इन्फ्रास्ट्रक्चर :** कार्यालय सह क्यूए कॉम्प्लेक्स लगभग पूर्ण। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट इकाई-1 कमीशन किया गया ; इकाई-2 का स्थापनाधीन है। आरसीए भवन फ़ाउन्डेशन एवं प्लिंथ बीम कार्य पूर्ण ; कॉलम कार्य प्रगति पर है।

**4. टाउनशिप विकास कार्य में** टाइप –डी टावर्स, टाइप –सी टावर्स फ़ाउन्डेशन कार्य, बाउंड्री वाल मास्टर प्लान पूर्ण, स्ट्रक्चरल डिज़ाइन और अस्थाई पहुँच मार्ग का कार्य चल रहा है।

**5. प्रमुख उपकरण में अब तक चार स्टीम जनरेटर** एंड |साइट पर पहुँच गए हैं (एसजी)शील्ड अक्टूबर 2025 एवं फरवरी ) 2026 मेसर्स एल एंड टी तक प्राप्त (होने की संभावना है।

**राजभाषा संबंधित आयोजन :**

- 28 मई 2025 को राजभाषा नीति, नियमों, प्रावधानों एवं वार्षिक कार्यक्रम के संशोधित लक्ष्यों के विषय में समस्त कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

- 16 जून 2025 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय बेंगलुरु के उप निदेशक द्वारा कैगा स्थल का निरीक्षण किया गया।
- 26 जून, 2025 में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 64 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।
- 19 जुलाई 2025 को कैगा-5व6 के कार्मिकों को राजभाषा नीति, नियमों, प्रावधानों, हिंदी तिमाही रिपोर्ट भरने एवं वार्षिक कार्यक्रम के संशोधित लक्ष्यों के विषय में समस्त कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- 25 अगस्त, 2025 में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 120 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।
- 17 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें 134 कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान किए गए।
- सितंबर माह में हिंदी पखवाड़े के दौरान 12 प्रतियोगिताएँ (मेरा अनुभाग विषय पर हिंदी लेख प्रतियोगिता, चित्र एक विचार अनेक प्रतियोगिता, यादों के झरोखे से प्रतियोगिता (रण लेखनसंस्म), श्रुत लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, वर्ग पहेली प्रतियोगिता, शब्द पुंज प्रतियोगिता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, स्मरण शक्ति प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, मेरी हिंदी कितनी अच्छी प्रतियोगिता करणव्या) संबंधी ( एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता) आयोजित की गई।
- तकनीशियन बैच को राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों एवं वर्तनी के मानकीकरण पर व्याख्यान दिया गया।
- ई गृहपत्रिका -अणुसंकेत के संयुक्त अंक -58-59 (अप्रैल, 2024- मार्च, 2025) को केजीएस के वेबपेज पर अपलोड किया गया।

### स्टीम जनरेटर का आगमन



## मेथी

मेथी महत्वपूर्ण हरी सब्जियों में एक है। इसका नियमित सेवन शरीर को स्वस्थ रखता है। एशिया और यूरोप में यह समान रूप से लोकप्रिय है। ओषधि और भोजन दोनों तरह से इसका उपयोग प्राचीन समय से किया जाता रहा है।

### आहार मूल्य

भारत में मेथी का साग लोकप्रिय है। मेथी से जहाँ आर्द्रता 86.1 प्रतिशत मिलती है वहीं प्रोटीन 4.4, वसा 0.9, खनिज 1.5, तंतु 1.1 और कार्बोहाइड्रेट 6.0 प्रति 100 ग्राम मिलते हैं। खनिज और विटामिनो में कैल्सियम 395, फास्फोरस 51, लौह तत्व 16.5 मि. ग्राम, कैरोटीन 2,340 माइक्रो ग्राम, नियासिन 0.04 और विटामिन सी 52 मि.ग्रा. प्रति 100 ग्राम भाग में मिलता है। इसमें कैलोरी ऊर्जा 49 मिलती है। वाष्प के द्वारा मेथी का साग पकाने पर इसके विटामिन नष्ट नहीं होते और साग भी स्वादिष्ट बनता है। इसलिए साग को हमेशा इसी पद्धति से पकाना चाहिए। मेथी की सूखी पत्तियों में दालों के बराबर प्रोटीन होता है और अगर भोजन में इन पोषक तत्वों की कमी हो तो मेथी से पूरी की जा सकती है। मेथी के बीज में 6 वसा, 26 राल तथा 22 प्रतिशत अल्ब्यूमिन (प्रोटीन) और अन्य दो विशेष तरह के प्रोटीन होते हैं। इतना ही नहीं, इसमें 26.2 प्रोटीन, 7.2 तंतु और 44.1 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट मिलता है। इसके अलावा कैल्सियम, पोटैशियम, लौह तत्व, सोडियम, गंधक और विटामिन 'सी' भी प्राप्त होता है।

### औषधीय गुण

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इसका पोषकता मूल्य 65 माना गया है। कई क्षारीय गुण भी इसमें पाए जाते हैं; जैसे-मेथीलेमिन, डाइमेथिलेमिन, ट्राइमेथाइमेलिन, कोलीन, यूरिन और बेटाइन, जो लैसिथिन को तोड़कर बनते हैं। मेथी के बीज में 0.33 से 0.1 प्रतिशत तक गइयोस्मेनिन पाया जाता है, जो स्टेरोइड प्रोग्रेस्टोन में परिवर्तित किया जा सकता है। इसका प्रयोग हारमोन्स के बदले में होता है। इससे गर्भ निरोधक क्षमता प्राप्त होती है। प्रोजेस्टोनो का बड़े पैमाने पर उत्पादन मेथी के बीजों से किया जा सकता है।

मेथी की पत्तियाँ सुगंधित, ठंडी और नरम होती हैं। अपचन, सूजन, यकृत, मुँह के अल्सर इत्यादि बीमारियों में ये बड़ी फायदेमंद होती हैं। अगर पत्तियों के साथ उबले पानी से कुल्ला किया जाए तो अल्सर में तुरंत फायदा पहुँचता है। मक्खन में उबाली गई पत्तियों से पित्त संबंधी विकारों में फायदा पहुँचता है। खून के निर्माण में मेथी का साग लड़कियों के लिए अत्यधिक फायदेमंद होता है। इससे वे खून की कमी और यौवन के शुरू में होनेवाली तमाम परेशानियों से छुटकारा पा सकती हैं। पत्तियों का उबटन बनाकर बाहरी या भीतरी अंगों की सूजन पर और जलनवाले स्थान पर लगाया जा सकता है।

मेथी के बीज बहुमूल्य ओषधि जैसे हैं। शरीर के भीतरी अंगों की सफाई के लिए ये सर्वश्रेष्ठ साधन माने जाते हैं। इसके साथ ही ये शरीर को शीतलता भी प्रदान करते हैं। वैसे आम भारतीय इसे चटपटे स्वाद के कारण ही प्रयोग में लाते हैं। कढ़ी के स्वाद में इसके कारण और निखार आता है। आयुर्वेद ग्रंथों में इसे एक अच्छा टॉनिक माना गया है। मेथी के बीज का रासायनिक विश्लेषण करने से यह ज्ञात हुआ है कि इसमें 'कॉड लीवर ऑयल' के गुण विद्यमान हैं; जैसे- मेथी में भी फास्केट्स लैसिथिन और न्यक्लियो-अल्ब्यूमिन पाया जाता है। इसका क्षारीय गुण भूख को बढ़ाता है। बच्चों के सुखंडी रोग में इससे अच्छा लाभ मिलता है। संक्रामक बीमारियों में भी इससे आराम मिलता है। शर्करा के रोगों में भी इससे आराम मिलता है। इसके लिए बीजों का दो चम्मच पाउडर दूध के साथ लें।

अगर आप चाहें तो उस चूर्ण को वैसे भी ले सकते हैं। अगर आप दूध के साथ या खाली चूर्ण न निगलना चाहें तो मेथी के दाने पानी में रात को भिगो दें और सवेरे छानकर पिँ। यकृत के बढ़ने जैसी बीमारियों का भी इससे उपचार हो सकता है। दूध बढ़ाने के लिए माताओं को इसकी लस्सी बनाकर दी जा सकती है। पहले इसको घी में भून लें और फिर चूर्ण बना लें। फिर इसे गेहूँ के आटे में मिला दें और आखिर में इच्छानुसार शक्कर मिला लें। आपका हलवा तैयार। प्रसूता स्त्री को थोड़ी मात्रा में इसका सेवन कराया जाए तो

सामान्य होने में ज्यादा आसानी होती है। अगर बीज के चूर्ण को बालों में लगाया जाए तो बाल बढ़ते हैं और उनका गिरना रुकता है।

कई बार स्वाद या सुगंध को महसूस करने की शक्ति खत्म हो जाती है। इसका कारण होता है स्वाद या गंध ग्रंथियों में किसी तरह की विषमता। कान के ऊपर और निचले भाग की ग्रंथियाँ, निचले जबड़े की ग्रंथियाँ और जीभ की ग्रंथियाँ कई बार श्लेष्मा या कब्ज के कारण खराब हो जाती हैं तथा रक्त इकट्ठा हो जाने से उसमें सूजन पैदा हो जाती है। इसी तरह नाक की ग्रंथियों में कुछ अशुद्धियों के इकट्ठे हो जाने अथवा कफ वगैरह के कारण सूँघने पर गंध महसूस करने की शक्ति खत्म हो जाती है। मेथी का नियमित प्रयोग इन विषमताओं को दूर कर देता है।

मेथी के बीजों से बालों की रूसी का भी उपचार किया जा सकता है। बस, करना इतना पड़ेगा कि दो चम्मच मेथी को रात भर पानी में भिगो दीजिए। सवेरे उन मुलायम बीजों को मसलकर गाढ़ा पेस्ट बना लीजिए। अब इसको अपने पूरे सिर पर लगाकर करीब आधे घंटे के लिए छोड़ दोजिए। उसके बाद सिर को शिकाकाई अथवा साबुन से अच्छी तरह साफ कर लीजिए। कुछ ही दिनों में रूसी का नामोनिशान नहीं मिलेगा।

आइए, इसके और चमत्कार जानिए- अगर आप इसकी चाय बनाकर बुखार से पीड़ित किसी व्यक्ति को पिलाएँ तो यह कुनैन के बराबर फायदेमंद साबित होगी। इतना ही नहीं, यह कफ जैसी बीमारी भी दूर करके शरीर की सफाई कर देता है। अल्सर की तकलीफ में भी इससे राहत पहुँचती है। मेथी लसलसी होने के कारण अल्सर व उसके आस-पास चिपक जाती है और पेट की अंतर्द्वियों को सुरक्षात्मक कोशिकाएँ प्रदान करती है। संक्रामक रोगों की विषम परिस्थितियों, जैसे- श्वास नली में सूजन, सर्दी-जुकाम, नासूर-नजला और निमोनिया में मेथी की चाय अत्यंत फायदेमंद होती है; क्योंकि इससे पसीना आता है और उसी के साथ ही सारा विषैलापन भी शरीर से बाहर निकल जाता है। दिन भर में रोगी को चार कप चाय पिलाई जा सकती है। हाँ, जैसे-जैसे हालत में सुधार हो वैसे-वैसे मात्रा में कमी करनी चाहिए।

स्वाद के लिए इसमें नींबू के रस की कुछ बूंदें डाली जा सकती हैं। एक बात और, उपचार के दौरान किसी तरह का भोजन या पोषक आहार नहीं लेना चाहिए।

मेथी के बीज से बने काढ़े से कुल्ला करना गले के लिए उत्तम है। और इसके लिए भी दवा बनाना उतना ही आसान। बस, मेथी के दो चम्मच बीज 250 मि.ली. पानी में डालकर उसे करीब आधे घंटे तक गरम कीजिए। हाँ, आँच जरा धीमी ही रखिए। लीजिए, गले की ओषधि तैयार ! मेथी की चाय की तरह ही अतिसार की बीमारी में इसका फव्वारा फायदेमंद है। फव्वारे के लिए विधि वही है जो गले के लिए। अतिसार महिलाओं को परेशान करनेवाली बीमारी है, जो इंद्रियों में आई कुछ विषमताओं के कारण होती है।

मेथी की चाय श्वास और शरीर की दुर्गंध को भी मिटाती है। कफ वगैरह और अन्य विषैली चीजों के कारण ये बीमारियाँ पैदा होती हैं। ये नाक, लिंग, खून के बहाव और योनि के क्षेत्र में पाई जाती हैं। मेथी की चाय इन्हें दूर कर सकती है। अगर आप दंत मंजनों और साबुनों से निराश हों तो इन्हें आजमाइए।

लिलोर्ड कॉर्डेल, जो विश्व विख्यात पोषक आहार विशेषज्ञ थे, ने कहा है- मेथी में शरीर को साफ करने की ऐसी शक्ति है जो अचंभित कर देती है। शरीर के अंदर की सारी विषमताओं को इसका तेल दूर कर देता है। कोशिकाएँ भी इसको अपने पुनर्निर्माण के लिए आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। इनमें से कुछ पसीने की ग्रंथियों में जाकर सारी बेकार चीजों को बाहर कर देती हैं।

मिस्र और इथियोपिया में मेथी के बीज ब्रेड और बेकरी के उत्पादनों में प्रयोग किए जाते हैं। मिस्र व स्विट्जरलैंड में भोजन को स्वादिष्ट बनाने में तथा अमेरिका में अनेक रूपों और तरकारियों में मेथी का प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं, जावा में तो बालों के टॉनिक और सौंदर्य सामग्री में भी इसका उपयोग होता है।

**साभार- डॉ हरिकृष्ण बाखरू द्वारा लिखित फलों और सब्जियों से चिकित्सा**

## विश्व जननी

वेद, पुराण, बाइबल, कुरआन  
मे दिया है मुझे बड़ा सम्मान  
हर धर्म ग्रंथ में मैंने मुझे पाया  
पूजनीया बताया, तुम्हारा स्वार्थ दिखया।

पर मुझ पर मुझे गर्व है  
नारी हूँ, नरक को स्वर्ग बनाना है  
सारे ब्रह्मांड को मुझे ही चलाना है  
आदम को हवा ने जगाया

यशोदा ने कृष्ण को मक्खन खिलाया  
कौशल्या ने राम को दूध पिलाया  
गोतमी ने सिद्धार्थ को बुद्ध बनाया  
मरियम ने जीजस को शांतिदूत बनाया।

सागर के पेट से मोती निकलते हैं  
मेरे गर्भ से विश्वज्योति निकलते हैं  
बसवेश्वर, विवेकानंद मेरे ही लाल हैं  
भगतसिंह, अब्दुल कलाम विश्व में विशाल हैं।

पुरुषों की जननी तेजस्विनी मैं हूँ  
वीरों की जननी जीजाऊ भी मैं हूँ  
मैंने तुम पर सब कुछ लुटाया  
तुमने मुझे देवी बनाकर मंदिर में बिठाया।

लक्ष्मी बनाया दिल बहलाया  
धन, दौलत अपने हाथ लगा लिया  
सरस्वती बनाया, संगीत गवाया  
नर्तकी बनाकर मुझे ही नचाया।

स्वार्थी मानव संभाल अब तो  
मैं हूँ तो सारा जग शांत, प्रशांत है  
दुर्गा, चंडी, काळी न बनाओ मुझे  
बस विश्व जननी बनकर रहने दो मुझे।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम  
हिंदी अध्यापिका  
दिवेकर कॉलेज ऑफ कामर्स

## माँ और बेटी का प्यार



माँ और बेटी की पढ़ाई  
छोटे से कमरे में, दीप जला  
माँ ने बेटी को पढ़ाना सिखाया  
किताबों की बातें, सपनों की उड़ान  
माँ बोली-"मेरी बेटी बनेगी महान"।

बेटी ने अक्षर-अक्षर को पहचाना  
माँ ने हर शब्द को अर्थ से सजाया  
गणित हो या विज्ञान की राह  
माँ बनी बेटी की पहली पाठशाला।

थक कर जब बेटी सो जाती  
माँ धीरे से रोटी सेंक लाती  
सुबह उठ, उसे तैयार करती  
फिर से पढ़ाई की दुनिया में ले चलती।

बेटी ने पूछा - "तू क्यों नहीं पढ़ी ?"  
माँ मुस्काई - "तेरे लिए सपने थे गढ़ी"  
अब जो तू पढ़े, मेरा सपना सजे  
तेरी जीत में ही मेरा मन रमे।

श्रीमती कुसुमा नाईक  
सहायक ग्रेड-3  
ईएमयू, कैगा 3व4



## डॉ बाबा साहेब अंबेडकर जी की 134वां जन्म दिवस समारोह



डॉ बाबा साहेब अंबेडकर जी की 134वां जन्म दिवस समारोह के अवसर पर मंच विराजमान अतिथिगण



मुख्य अतिथि श्री विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल एवं श्री के श्रीराम, केंद्र निदेशक, कैगा 1 व 2 द्वारा दीप प्रज्वलन



महिलाओं द्वारा बुद्ध वंदना



श्री विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल द्वारा सभा को संबोधन



श्री के श्रीराम, केंद्र निदेशक, कैगा 1 व 2 द्वारा सभा को संबोधन



श्री जे एल सिंह, परियोजना निदेशक, द्वारा सभा को संबोधन



श्री सुनील कुमार ओझा, केंद्र निदेशक, द्वारा सभा को संबोधन



श्रीमती सुवर्णा सतीश गांवकर, प्रमुख (मा.सं.) द्वारा सभा को संबोधन



मुख्य द्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल बैग एवं स्कूल के लिए डॉ बाबा साहेब अंबेडकर जी के भावचित्र का वितरण



मुख्य अतिथि द्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल बैग एवं स्कूल के लिए डॉ बाबा साहेब अंबेडकर जी के भावचित्र का वितरण

17 से 20 अप्रैल 2025 तक कन्नड़ सह्याद्री संघ द्वारा आयोजित " सह्याद्री संभ्रम " समारोह की झलकियां



## हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार

एक प्रसिद्ध समाज सुधारक - स्वामी श्री दयानंद सरस्वती जी का कथन है- "हिंदी एक मात्र भाषा है, जिसके द्वारा संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

हिंदी भाषा भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में एक ऐसा सेतु या एक ऐसा सामूहिक माध्यम है जो पूरे देश को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, भावनाओं, विचारों, संस्कारों और त्योहारों को एक दूसरे से साझा कर आपस में मजबूत पुल का निर्माण करती है।

हिंदी भाषा वर्षों से भारत देश में किसी न किसी रूप में यानी संपर्कभाषा, राष्ट्रभाषा, राज्य भाषा, व्यापार की भाषा और जनभाषा के रूप में प्रयोग होती आ रही है। स्वतंत्रता संग्राम में देश को एक सूत्र में बांधने में हिंदी भाषा की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण रही थी कि संविधान निर्माताओं ने इसकी महत्ता और लोकप्रियता को देखते हुए इसे भारत की राजभाषा बनाने का गौरवपूर्ण कार्य किया। हिंदी भाषा के प्रयोग, विकास और प्रचार-प्रसार के लिए भारत के संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 में और वार्षिक कार्यक्रम में निदेश दिए गए हैं।

वैसे तो, भारत देश में 19वीं शताब्दी के शुरुआत में ही हिंदी भाषा का विकास और प्रचार - प्रसार आरंभ हो चुका था। इस दिशा में हिंदी साहित्यकारों का योगदान अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास है। देश स्वतंत्र होने के बाद 1949 में हिंदी को देश की राजभाषा घोषित करने और आधुनिक काल में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से देश और दुनिया में हिंदी भाषा का प्रचार एवं प्रचार काफ़ी तेजी से बढ़ने लगा है।

हिंदी भाषा का देश के साथ- साथ विश्व स्तर पर प्रचार - प्रसार में जहाँ एक ओर हिंदी साहित्यकारों, शिक्षण संस्थानों, पत्रकारिता, लेखन, स्वैच्छिक संस्थानों, आकाशवाणी, सरकारी संगठनों, सोशल मीडिया जैसे रेडियो, दूरदर्शन, विज्ञापन जगत, हिंदी सिनेमा, इंटरनेट, गूगल और मास - मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा विभाग और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र ने अपनी सुविचारित नीति एवं सुसंगत प्रयासों सरकारी कार्यालयों के लिए नया हिंदी भाषा सॉफ्टवेयर प्रोग्राम तैयार किया। यह कार्यालयों को उनके कामकाज को स्वचालित करने

और उनकी कुशलता में सुधार करने में मदद कर रहा है। मंत्र राजभाषा, हिंदी शब्द सिंधु, स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ', हिंदी स्वयं शिक्षण लीला, हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत प्रशिक्षण, ई-महाशब्दकोश, गुगल इनपुट टूल्स आदि के उपयोग से सरकारी कामकाज संपादित करना आसान हुआ है। देश के युवाओं को अधिक-से-अधिक सूचनाएँ हिंदी में उपलब्ध करा कर उन्हें हिंदी से संबंधित कई प्रकार के ऑनलाइन सॉफ्टवेयरों और मोबाइल एपों के जरिए तेजी से हिंदी से जोड़ने में सफलता प्राप्त कर रहा है। इंटरनेट पर भी हिंदी अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। हिंदी की वेबसाइटों की संख्या जिस अनुपात में बढ़ रही हैं उसी अनुपात में उसके पाठकों की संख्या भी बढ़ रही है।

आज हिंदी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में सम्यक विकास कर, वैश्विक भाषा के रूप में भी मान्यता प्राप्त कर रही है। जनसंचार, रोज़गार, प्रबंधन, विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा तथा प्रशासनिक कामकाज की भाषा के रूप में जनता से जुड़ कर सशक्त और दक्ष बनती जा रही है और इस प्रौद्योगिकी के दौर में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार सम्यक रूप से हो रहा है। आज हमें यह कहते हुए गर्व होता है कि हिंदी भाषा विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

हमारे देश के प्रतिनिधियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में दिए जाने वाले भाषण भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में सराहनीय और अनुकरणीय है। साथ ही साथ, हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों, कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं एवं अन्य गतिविधियों का उद्देश्य भी प्रोत्साहन, प्रेरणा और सद्भावना से हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना है।

"जिस जुबां में माटी की खुशबु हो, जिसमें गूजें माँ के बोल। ऐसी प्यारी हिंदी भाषा को, हम दें उसका असली मोल।"

- कुमारी ऐमन खानम,  
कक्षा 8, प.ऊ.कें.विद्यालय, कैगा



## लोमड़ी-गधा-शेर और समाज



लोमड़ी जो अपनी धूर्तता के लिए कुख्यात थी जंगल के राजा शेर को लुभाकर अपना काम निकलवाने में बहुत माहिर थी। एक दिन शेर ने उसे बुलाकर कहा " मुझे जोर की भूख लगी है, मेरे लिए कुछ खाना पेश करो नहीं तो मैं तुम्हें ही खा जाऊंगा", यह सुनकर लोमड़ी एक पल के लिए घबरा गई मगर उसका स्वभाव ही ऐसा है कि हमेशा दूसरों को परेशानी में डालकर या फसाकर ही अपना जीवन बिताना, लोमड़ी निकल पड़ी किसी न किसी जानवर को लुभाकर शेर का भोजन बनाने। रास्ते में एक गधा मिला, उसने गधे से कहा "अरे आज तुम्हारा भाग्य खुल गया, मुझे जंगल के राजा ने कहा था की आज सब से पहले जो मुझे मिलेगा उसी को वह अपना उत्तराधिकारी बनाएंगे, तुम तो जानते हो अपना राजा बूढ़ा हो चुका है, चलो राजा के पास चलते हैं", यह सुनकर गधा डर गया। मगर लोमड़ी ने अपनी चतुराई से उसे बहला फुसलाकर अपने साथ शेर के पास ले आयी। जैसे ही गधा पास आया, शेर उस पर टूट पड़ा, मगर गधे ने अपने आप को उसके पंजों से बचा लिया और भाग निकला, मगर इस झपटा-झपटी में गधे का एक कान फटकर शेर के हाथों लग गया। गधे के पीछे लोमड़ी भी भागने लगी, गधे ने लोमड़ी से कहा " तुम ने मुझे धोका दिया", लोमड़ी ने चिल्लाते हुए कहा " वेबकूफ मत बनो, तुम्हारे सर पर राजा का मुकुट ठीक से सजे इसलिए शेर ने तुम्हारे कान को काटा"। गधे ने इस बात को सच मान लिया और पुनः शेर के पास गया। शेर ने फिर से गधे पर आक्रमण किया और इस बार गधे के पूंछ को काटा। गधा फिर से भागा और अपने पीछे दौड़ती आती लोमड़ी से पूछा "तुम ने फिर मुझ से झूठ कहा"। लोमड़ी ने फिर से गधे को बहलाया कि उसकी पूंछ को इस लिए काटा गया कि वह सिंहासन पर आराम से विराजमान हो सके। इस बार भी गधे ने लोमड़ी की बात को सच माना, फिर से शेर के पास वापस गया। इस बार शेर ने गधे को भागने का मौका नहीं दिया और उसका वध कर ही दिया।

अब शेर ने लोमड़ी से कहा-"जाओ जाकर इसकी चमड़ी उतारकर बाकी अंग मुझे खाने के लिए पेश करो"। लोमड़ी ने गधे की चमड़ी को निकाला और खुद गधे के दिमाग को खा गयी, बाकी अंग शेर के भोजन के लिए पेश किया। अपने सामने रखे भोजन में गधे के सारे अंग थे सिवाय मस्तिष्क के, यह देखकर शेर बोखला गया, गुस्से से लोमड़ी से पूछा - "इस गधे का दिमाग कहाँ है"?, लोमड़ी ने तुरंत जवाब दिया - " राजा, गधे के पास दिमाग था ही नहीं, अगर होता तो पहली बार जब आप ने उस पर हमला कर उसका कान को निकाला था तभी वह हमारे इरादों को समझ जाता, मगर उसके कान, पूंछ दोनो निकालने के बाद भी वह आप के पास लौटकर आया", शेर को यह बात सही लगी। लोमड़ी जैसे एक छोटे से जीव ने शेर जैसे शक्तिशाली को भी गधा बना दिया अपनी बातों में उलझा कर।

इस कहानी को हम ने कभी न कभी सुनी है, लोमड़ी जैसे मिजाजवाले लोग इर्द-गिर्द नजर आते ही है, वे अपने जीवन

को बेहतर, सुखमय बनाने के लिए दूसरों को गधा या बलि का बकरा बनाते रहते हैं,

उन लोगों को इस बात का जरा सा भी ज्ञान नहीं होता की वह किसी के विश्वास को ठेस पहुंचा रहे है। लोगों को अपनी मीठी-मीठी बातों के जाल में फसाकर अपना काम निकलवा लेते है, जो लोग इनके जाल में फसते हैं उन्हें पता भी नहीं चलता कि वे किस तरह की जाल में फसे जा रहें हैं। हर बार एक नया बहाना, नया झूठ और हर बार इनका बहाना सच ही लगता है सामने वाले को, झूठ को सच के वस्त्र में इस खूबसूरती से सजा देंगे की सामने वाले को लगता है कि कितना सही कह रहा है और बार बार ऐसे लोगों के जाल में फसते जाएंगे। अगर कभी इनकी मक्कारी सामने वाले को समझ में आयी और पकडे गए तो समने वाले पर ही उंगली उठायेगे, मगर कभी भी अपनी गलती को नहीं मानेंगे। ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखने में ही भलाई है। एक प्रादेशिक मुहावरा है - "सज्जनों का संग मधुपान के समान", मगर इन के संगत में आने के बाद लगेगा इस कहावत को बदलकर "सज्जनों का संग मधुपान के समान और दुर्जनों का संग मधुमक्खी के डंक समान"। अगर थोड़ी सी समझदारी है तो दोबारा इनके जाल में नहीं फसेंगे। जब पता चला सामने वाले की नीयत में है खोट, वह विश्वासघाती है तो अपने आप को इन से बचाए रखने में ही अकलमंदी है। एक बार किसी ने धोखा दिया तो वह उसकी गलती है और अगर दोबारा उसी व्यक्ति से धोखा खाया मतलब अपनी बेवकूफी है। हम अपने आचार-विचार और व्यवहार से लोमड़ी, गधा या शेर बने हैं समाज में, यह समाज ही समझता है।

किसी की जिंदगी को खूबसूरत बनाने के लिए जानबूझ कर बोला गया झूठ या की गई गलती जो किसी को भी हानि नहीं पहुंचाता हो वह शायद भगवान को भी सही लगती होगी, मगर इस जमाने में किसे दूसरों की जिंदगी और भावनाओं की पड़ी है? सब अपने-अपने जिंदगी को संवारने में ही लगे हैं। किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने से पहले एक बार सोच के तो देखें अगर अपनी ही भावनाओं को किसी ने इसी तरह ठेस पहुंचाया तो खुद पर क्या बीतेगी। किसी के भी साथ बहुत ही बुरा सलूक करके हम उस के मन को अपने प्रति कठोर तो बना ही देंगे और दोबारा उसके मन में अपने लिए जगह बना पाना नामुमकिन हो जाएगा, चाहे कुछ भी कीजिए वह इंसान दोबारा आप पर विश्वास ही नहीं करेगा और दूरी बनाए रखेगा अपनी खुशहाली के लिए। किसी की नजर में बने रहने के लिए एक उम्र लग जाती है मगर नजर से गिरने के लिए एक पल ही काफी है। "कर्म भला हो या बुरा, फल पर नाम तेरा" बस यही याद रखना।

श्रीमती स्मिता शेट्टी  
वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2

## बोधि वृक्ष: ज्ञान और शांति का प्रतीक

बोधि वृक्ष, जिसे पीपल वृक्ष भी कहा जाता है, भारतीय संस्कृति और इतिहास का एक अनमोल हिस्सा है। यह वही वृक्ष है, जिसके नीचे भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यह वृक्ष न केवल बौद्ध धर्म का, भारतीय आध्यात्म का भी गहरा प्रतीक है। बोधि वृक्ष का संबंध केवल आसथा से नहीं, बल्कि पर्यावरण और जीवनदायिनी ऊर्जा से जुड़ा हुआ है। यह वृक्ष शांति, साधना और चेतना का प्रतीक माना जाता है। इसकी



छांव में बैठकर अनेक ऋषियों, मुनियों और साधकों ने ध्यान लगाया है। आज भी यह वृक्ष श्रद्धा और भक्ति का केंद्र बना हुआ है। यह वृक्ष न सिर्फ इतिहास की याद दिलाता है, बल्कि भविष्य को भी हरियाली से भरने का संदेश देता है। बोधगया में स्थित बोधि वृक्ष का वंशज आज भी श्रद्धालुओं को शांति और प्रेरणा दे रहा है।

### बोधि वृक्ष का इतिहास और विशेषताएं

- मूल वृक्ष को सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा ने श्रीलंका भेजा था, उसका वंशज आज भी विद्यमान है।
- बोधगया में जो वृक्ष आज है, वह उसी पवित्र वृक्ष की चौथी पीढ़ी है।
- यह वृक्ष 100 वर्षों से भी अधिक जीवित रह सकता है और हजारों पक्षियों का आश्रय होता है।
- इसकी पत्तियां औषधीय गुणों से भरपूर होती हैं, जो हृदय रोग और अस्थमा के इलाज में उपयोगी हैं।
- यह वृक्ष दिन और रात में ऑक्सीजन छोड़ता है, जो पर्यावरण के लिए अत्यंत लाभकारी है।

## कैगा टाउनशिप केपीईए कार्यालय में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह – 2025



श्री के श्रीराम, केंद्र निदेशक, कैगा 1व2 द्वारा ध्वजारोहण



श्री के श्रीराम, केंद्र निदेशक, कैगा 1व2 द्वारा सभा को संबोधन



## नई नियुक्ति

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र अपने नए साथियों का कैगा इकाई में हार्दिक स्वागत करती है।

SI.No.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	प्रारंभिक पदनाम	एनपीआईएल में कार्यभार	अनुभाग
1	आकाश साधुखान	सहायक ग्रेड-1	02-06-2025	सीएमएम
2	रेनु छिव्कारा	उप प्रबंधक	16-07-2025	मानव संसाधन
3	नागराज बी नायक	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एसएमयू
4	परीक्षित एल पेडनेकर	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
5	बॉबी शर्मा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
6	सात्विक भट	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	टीयू
7	सिन्दू	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
8	सैयद जफर अब्बास	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सीएमयू
9	सौविक रे	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	ईएमयू
10	तरुण कुमार बंकोलिया	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	ईएमयू
11	ज्योतिर्मय सरकार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सीएमयू
12	अभय सोनी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
13	अमित कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
14	चंद्रवीर बंस्कर	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
15	नमन सिन्हा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
16	अंशुल कुमार वर्मा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	क्यूए
17	श्याम सुंदर	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एसएमयू
18	सौम्या सिस्ता	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
19	जी अजयकुमार रमेशभाई	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
20	सौरव रस्तोगी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सीएमयू
21	कार्तिक वर्मा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	ईएमयू
22	जी पवनकुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एमएमयू
23	जागीरदार अनिरुद्ध	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	क्यूए
24	अनिल कुमार आर	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	प्रचालन
25	दीपांशु वर्मा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एफएचयू
26	बठिना यज्ञ कुमार रेड्डी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
27	कुंटुमल्ला थिरुमलेश	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
28	भूपति विनीत	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
29	कासीना चन्द्र किरण	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
30	धिप्पाबातिनी शिव कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
31	चिन्ता प्राणीता	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
32	धुलीपाला धीरज	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
33	मुफलिहा पी पी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
34	अंश मिश्र	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
35	एमडी सुभान	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
36	सत्यम दुबे	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
37	आदर्श कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
38	शरद चन्द्र	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सेफटी
39	शर्मा अश्विनकुमार मंजरी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सेफटी
40	सतीश कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	क्यूए
41	मनीष कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	विद्युत पीई -1
42	ऐक्य माजी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	विद्युत पीई -2
43	सुधांशु शेखर सिंह	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सी एंड आई

44	शुभम कुमार सुंदरम	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	आरई
45	टी देवराज नायक	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	आरई
46	प्रवीण तोमर	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	टीआई
47	अखिलेश कटियार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	टीआई
48	मनीष मीणा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	न्यूक्लियर पाइपिंग
49	यश अग्रवाल	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	न्यूक्लियर पाइपिंग
50	प्रसन्ना पांडा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	न्यूक्लियर पाइपिंग
51	अजय राज मीणा	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	निर्माण पाइपिंग
52	आफताब अंसारी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	निर्माण पाइपिंग
53	शिवम सिंह रावत	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	आरई
54	आशुतोष कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एफई
55	आशुतोष कुमार	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	एफई
56	अथर्व सेठी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	सिविल
57	वुटुकुरु चक्रधर रेड्डी	वैज्ञा. अधि/सी	01-08-2025	क्यूए
58	महेश कुमार	उप प्रबंधक	08-08-2025	वित्त एवं लेखा
59	अजाशका एस	सहायक ग्रेड-1	29-08-2025	वित्त एवं लेखा
60	अरुण बाबू मानपेट्टी	सहायक ग्रेड-1	29-08-2025	वित्त एवं लेखा

### आगमन

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र स्थानांतरण पर आए साथियों का कैगा इकाई में हार्दिक स्वागत करती है।

क्र.सं	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	किस इकाई से स्थानांतरण	कैगा स्थल में कार्यभार तिथि
1	प्रयाग पी बोंडगुलवार	वैज्ञा. अधि/जी	केएपीपी 3 और 4	22-04-2025
2	एस श्याम सुंदर प्रसन्ना	वैज्ञा. अधि/जी	मपबिघ	24-04-2025
3	वाई रवींद्र बाबू	महाप्रबंधक (सीएमएम)	केएपीएस	31-05-2025
4	बी कृष्णा प्रसाद	वैज्ञा. अधि/एच	आरक्यूएसी- हैदराबाद	23-06-2025
5	एन. सदानंद कामथ	वैज्ञा. अधि/एच	केएपीएस-1 और 2	27-06-2025
6	आर.एम. नचम्माई	वैज्ञा. अधि/एच	मपबिघ	07-07-2025
7	गणेश एम शर्मा	वैज्ञा. सहायक/एफ	आरएपीपी 7 और 8	17-07-2025
8	दीपांकर बेज	वैज्ञा. अधि/जी	आरएपीपी 7 और 8	15-09-2025
9	पद्मा शिवसुब्रमण्यन अय्यर	उप महाप्रबंधक(मा.सं)	केकेएनपीपी	25-09-2025
10	श्रीनिवासराव आदरी	तक अधिकारी/एफ	आरएपीपी 7 और 8	26-09-2025

### स्थानांतरण

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र से स्थानांतरित कार्मिकों के भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं।

क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	स्थानांतरित इकाई	स्थानांतरण तिथि
01	फ्लोरेंस सौम्या जेकब	चिकित्सा अधिकारी/एफ	एन ए पी एस	03/05/2025
02	राजेश गोपाल पाठक	मुख्य अधीक्षक	के ए पी एस 1व2	05/07/2025
03	भवीश संदीप बी	प्रबंधक (मा सं)	के के एन पी पी	11/07/2025
04	रघुमंडल कुर्मी नायडु	तकनीशियन/डी	के के एन पी पी	28/08/2025
05	एम वी बी एस प्रसाद	वैज्ञा. अधि./एच	तकनीकी इकाई	29/08/2025

## सेवानिवृत्ति

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र सेवानिवृत्त साथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए उनके सुखद भविष्य की कामना करती है।

क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	अनुभाग	सेवानिवृत्ति तिथि
01	नंदा एन	वैज्ञानिक सहायक/ई	सूचना प्रौद्योगिकी	30-04-2025
02	अरुण नारायण पवार	वैज्ञानिक अधिकारी/ई	परिवहन सेवाएं	30-04-2025
03	जगदीश तिमप्पा नाईक	वरिष्ठ तकनीशियन/जे	विद्युत अनुरक्षण	30-04-2025
04	रामचंद्र एच नेत्रेकर	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	ईंधन प्रहस्तन	30-04-2025
05	रामचंद्र नारायण हेब्बार	वैज्ञानिक अधिकारी/एफ	प्रचालन	30-04-2025
06	रमेश कृष्णाजी भुसारे	फोरमैन/डी	टाउनशिप विद्युत	30-04-2025
07	सुरेश सोमा नाईक	वरिष्ठ तकनीशियन/एच1	गुणवत्ता आश्वासन	30-04-2025
08	जेरेमी मिनिन डिसौजा	तकनीशियन/एफ	यांत्रिकी अनुरक्षण	31-05-2025
09	यास्मिन हारुन शेख	अधिशायी सहायक	सीएमएम	31-05-2025
10	कृष्णा अण्णु हुलस्वार	तकनीशियन/एफ	नियंत्रण अनुरक्षण	31-05-2025
11	शशिकला सुरेश बोरकर	तकनीशियन/डी	अस्पताल	31-05-2025
12	शारदा एम गौडा	तकनीशियन/डी	अस्पताल	31-05-2025
13	बसवराज जी शिरहट्टी	वैज्ञानिक अधिकारी/एच	विद्युत	31-05-2025
14	उमरखान	तकनीशियन/जी	सेवा अनुरक्षण	31-05-2025
15	के एम उज्जप्पा	वैज्ञानिक अधिकारी/ई	ई एवं यू एस	31-05-2025
16	शारदा आर कर्की	तकनीशियन/डी	वित्त एवं लेखा	31-05-2025
17	अमोल रेवणकर	वैज्ञानिक अधिकारी/एच	अभियांत्रिकी एवं प्रापण	31-05-2025
18	राघवेंद्र वी मनोहर	वैज्ञानिक अधिकारी/एच	नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र	31-05-2025
19	पुट्टराजु एफ पंडित	वैज्ञानिक अधिकारी/एफ	सेवा अनुरक्षण	30-06-2025
20	वनिता श्रीकांत नाईक	तकनीशियन/जी	सी टी सी	30-06-2025
21	अनिता जे कलस	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2	मानव संसाधन	30-06-2025
22	पी आर सुंदरकुमार	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2	वित्त एवं लेखा	31-07-2025
23	अंथोनी एडवर्ड	फोरमैन/सी	ई एवं यू एस	31-07-2025
24	राजन राया सालुंके	तकनीकी पर्यवेक्षक-ए	संचार	31-07-2025
25	उल्हास विठोबा नाईक	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2	सी एम एम	31-07-2025
26	पुट्टराजु के	वैज्ञानिक अधिकारी/ई	नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र	31-07-2025
27	रामदास कृष्णा देवली	वरिष्ठ तकनीशियन/जे	यांत्रिकी अनुरक्षण	31-07-2025
28	सतीश पंढरीनाथ किन्नरकर	अधिशायी सहायक	सी एम एम	31-07-2025
29	देविदया ए नाईक	अधिशायी सहायक	तकनीकी इकाई	31-07-2025
30	सतीश रामा अंकोलेकर	वरिष्ठ तकनीशियन/एच1	अपशिष्ट प्रबंधन	31-08-2025
31	चन्नबसप्पा एस दोड्डुमनी	फोरमैन/डी	विद्युत अनुरक्षण	31-08-2025
32	बसनगौडा एस नागनूरी	वैज्ञानिक अधिकारी/ई	सी टी सी	31-08-2025
33	वेंकटेश जे भट	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2	वित्त एवं लेखा	30-09-2025
34	सदानंद एम बग्गोण	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	परिवहन सेवाएं	30-09-2025

**हिंदी संग भारतीय भाषाओं का समभाव**

**सबके सुरों में गूँजे एक ही भाव**

## कैगा संयंत्र स्थल में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह – 2025



श्री सुनील कुमार ओझा, केंद्र निदेशक, कैगा 3व4 द्वारा ध्वजारोहण



## कैगा टाउनशिप होमगार्ड कार्यालय में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह – 2025



79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर सामूहिक चित्र

श्री जे एल सिंह, परियोजना निदेशक, कैगा 5व6 द्वारा ध्वजारोहण

## कैगा टाउनशिप में 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2025

श्री बी विनोद कुमार, स्थल निदेशक, कैगा स्थल द्वारा ध्वजारोहण एवं 79 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियां

